KNOWLEDGE IS POWER

ज्ञान, कौशल का संगम भारत...

रत्नांक

Ratnank

महाविद्यालय पत्रिका

अंक : अष्टम्, मार्च 2025

श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी गर्ल्स कॉलेज, किशनगढ़

(P.G. College Affiliated to MDSU Ajmer)

प्रधान संरक्षक : श्री अशोक पाटनी
संरक्षक : श्री सुरेश पाटनी
श्री महावीर कोठारी
CA सुभाष अग्रवाल
परामर्श : डॉ. शैलेन्द्र पाटनी (प्राचार्य)
श्री विश्वजीत जारोली (IQAC)
सम्पादक : डॉ. हुकम सिंह चम्पावत
सह सम्पादक : डॉ. ज्योति शर्मा, कविता प्रियदर्शिनी
टंकण : नेहा शर्मा
मुद्रण एवं वितरण : अमित दाधीच
राजेश जैन

श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी गर्ल्स कॉलेज
अजमेर रोड़, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर (राजस्थान) 305801,
दूरभाष : 01463-257000
ई-मेल : ratnank@rkgirlscollege.edu.in
वेब साइट : www.rkgirlscollege.edu.in

विषय	पृष्ठ
रत्नांक	2
अध्यक्ष संदेश	3
उपाध्यक्ष संदेश	4
सचिव संदेश	5
प्राचार्य संदेश	6
सम्पादकीय	7
सामाजिक वर्ण व्यवस्था में कौशल दर्शन	8
अन्न के कण और आनंद के क्षण	9
हर्षिता गोयल साक्षात्कार	10
मछली की भूल	11
जीव विज्ञान की दृष्टि से ज्ञान, कौशल का संगम भारत	12
रामराज्य और भारतीय लोकतंत्र : संविधान में.....	13
नई दिशा नीति 2020 एवं भारतीय ज्ञान प्रणाली	14
मानव जीवन का प्रबल पक्ष गणित विषय	15
भारतीय ज्ञान परंपरा	16
महाकुंभ 2025 : धार्मिक - आर्थिक परिप्रेक्ष्य	17
अधूरी बातें, महाकुंभ संगम प्रयागराज	18
शिक्षा, कौशल का संगम : भारत	19
प्रगति, कॉमर्स से कौशल, उद्यमिता	20
कौशल से महिलाओं को रोजगार के अवसर	21
भारत में कौशल और उद्यमिता नवाचार : शिक्षा संदर्भ में	22
ज्ञान, कौशल भारत की प्रगति का आधार	23
हे मानव, ज्ञान कौशल का संगम भारत, अहसास	24
ज्ञान का गहनतम स्वरूप-कुम्भ स्नान, गाँव	25
ज्ञान किरण, हमारा भारत, संगम	26
सफर, ज्ञान कौशल का संगम भारत, ज्ञान, कौशल और.......	27
गणित और कौषल : भारत से संबद्ध एक अमूल्य धरोहर	28
पी.टी. उषा पय्योली, डिजिटल क्रांति से सशक्त भारत	29
आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस : भारत में ज्ञान और.........	30
ज्ञान क्या है?, माँ	31
कंप्यूटर, ज्ञान की गंगा, ज्ञान कौशल का संगम	32
ज्ञान, आँधी, भारत एवं ज्ञान कौशल का अद्‌भुत संगम	33
भारत, प्रबंधन का मंत्र	34
उड़ान, Digital Literacy and Its Role....	35
Bharat: A Blend of Knowledge and Skills	36
Maha Kumh : Balancing Faith, Safety and....	37

एक शिक्षा स्वप्न

शिक्षा से जब कदम बढ़ेंगे, श्रेष्ठ बनेगा देश
बेटी हो या बेटा हो, मेरा यह सन्देश !

विशाल हृदयी, सक्षमता की प्रतिमूर्ति पूज्य 'बाबासा' का शिक्षा से जुड़ा एक ऐसा स्वप्न जिसे वे अन्तर्मन से छूकर कहते थे कि इस शहर के आस-पास की निवासित समस्त बालिकाओं में शिक्षा की अलख जगाने हेतु एक ऐसा महिला शैक्षणिक केन्द्र हो जिसमें वे अपने भविष्य को निखारकर आत्मनिर्भर बन सके। वे महान व्यक्तित्त्व जिन्होंने अपने दीर्घ एवं गहन अनुभव से यह महसूस किया कि यदि घर की एक कन्या पढ़ेगी तो अनेक पीढ़ीयाँ शिक्षित होंगी तथा वे कहीं दबेगी नहीं, हारेगी नहीं, स्वयं को सफल, सक्षम बनाये हुए एक नव समाज की स्थापना करेंगी।

उनके इसी दिव्य स्वप्न को साकार करने का पवित्र कर्त्तव्य उनके परिजनों ने पूर्ण करते हुए किशनगढ़ क्षेत्र को अत्याधुनिक शिक्षा से जुड़ा एक ऐसा शिक्षण संस्थान समर्पित किया जिसे देखते ही लगता है मानो सरस्वती वाणी को ऊर्जस्वित करता ऐसा अद्‌भुत, अनुपम, अद्वितीय शैक्षिक संस्थान पहले नहीं देखा! इन पावन व उच्च विचारों के धनी 'बाबासा' एवं उनके परिवारजनों की शोभा जितने भी शब्दों में की जाए वहाँ शब्दों की अल्पता प्रतीत होने लगती है।

पूज्य 'बाबासा'

को कोटि-कोटि नमन !

''रत्नांक''

'रत्नांक' शब्द दो शब्दों यथा 'रत्न + अंक' शब्द से मिलकर बना है, जिसमें 'रत्न' से आशय धरती से प्राप्त बहुमूल्य खनिज पदार्थों से माना जाता है, जिसका सामान्य अर्थ प्रसिद्ध चमकीले खनिज पदार्थ हीरे, मणि, नगीना या जवाहारात से लिया जाता है। इसका विशिष्ट व महत्वपूर्ण अर्थ 'सर्वश्रेष्ठ' है।

इसमें दूसरा शब्द अंक है जिसका अर्थ संख्या, गोद, चिन्ह् व भाग्य माना जाता है। अतः 'रत्नांक' शब्द से आशय 'रतन के लिए अंक' या 'रतन की गोद में' से लिया जा सकता है। यहाँ 'रत्नांक' शब्द इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि हमारा पूरा समूह परम आदणीय श्री रतनलाल जी एवं उनके आत्मज कंवरलाल जी से ही पल्लवित है। ''रत्नांक'' शब्द में दो वर्णों यथा 'र' व 'क' की अपनी एक विशिष्ट महता प्रतिपादित है। इस शब्द में अग्र वर्ण 'र' पूजनीय श्री रतनलाल जी का स्मरण कराता है तथा शब्द का अन्तिम व पश्च वर्ण 'क' परम आदरणीय श्री कंवरलाल जी को पुष्ट करता है, साथ ही ये वर्ण हमारे महाविद्यालय के नाम को भी चरितार्थ करते हुए प्रतीत होते हैं।

इस शब्द के सामासिक स्वरूप से अर्थ को समझा जाये तो प्रथम अर्थ रतन के लिए अंक एवं द्वितीय अर्थ रतन के अंक में अर्थात् रतन की गोद में से माना जा सकता है। जिसका अर्थ परम पूज्य बाबासाहेब श्री रतनलाल जी को समर्पित प्रकाशित पत्र से है तथा दूसरा अर्थ पूजनीय बाबासाहेब की गोद में पल्लवित व पुष्पित समूह के सम्बन्ध में माना जा सकता है। महाविद्यालयी पत्रिका के सम्बन्ध में हमारा यह प्रयास है कि अष्टम् अंक के रूप में प्रकाशित यह महाविद्यालयी पत्रिका ज्ञान की आभा को प्रकाशित करते हुए परमपूज्य बाबासाहेब एवं परम आदरणीय श्री कंवरलाल जी सहित 'ज्ञान, कौशल का संगम भारत' को समर्पित है। अतः इस पत्रिका का नाम 'रत्नांक' रखना हमारे महाविद्यालय ही नहीं अपितु सम्पूर्ण आर. के. समूह के लिए गौरव की बात है।

संपादक

संदेश

भारतीय संस्कृति में ज्ञान प्रणाली का स्वरूप विस्तृत एवं सर्वोत्कृष्ट रहा है। इसका प्रमाण केवल वेद, पुराण, उपनिषद ही नहीं सर्वधर्म के सर्वग्रंथ हैं। इन ग्रंथों में हमारे देश की सभ्यता, संस्कृति, अध्यात्म का ज्ञान परिलक्षित है। इसी ज्ञान से व्यक्ति विशेष, समाज विशेष व धर्म विशेष में कौशल की स्थापना होती है एवं कौशल से राष्ट्र निर्माण की राह प्रशस्त होती है।

ज्ञान एवं कौशल दोनों एक दूसरे के पूरक है। मुझे विश्वास है 'ज्ञान कौशल का संगम भारत' आधारित 'रत्नांक' पत्रिका का यह विशिष्ट अंक बेटियों में नव ज्ञान का संचार करते हुए समाज में ज्ञान कौशल की स्थापना करेगा। 'रत्नांक' के इस नव अंक की मैं सम्पादक एवं सम्पूर्ण संपादन मंडल को असीम बधाई व शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

इन्हीं मंगलकामनाओं सहित।

अशोक पाटनी
अध्यक्ष
कॉलेज प्रबंधन समिति

संदेश

कौशल ज्ञान मनुष्य के पुस्तकीय व अनुभव ज्ञान का सुंदर समन्वित दर्पण है। एक मानव ने ग्रंथों से कितना ज्ञान प्राप्त किया है उसका साक्षी कौशल रूपी प्रायोगिक स्वरूप है। एक शिक्षित व्यक्ति जब समाज में कदम रखता है तो उसके शब्दों से उसकी भाषा, उसकी वाणी से उसकी विनम्रता व उसके कार्यो से उसके ज्ञान की परख हो जाती है। अतः यह स्पष्ट है कि मनुष्य को ज्ञान के साथ कौशल की सीख प्राप्त करनी चाहिए।

शिक्षा प्रणाली में ज्ञान के इस सागर में कौशल की डुबकी जीवन को तारने के लिए आवश्यक है। इसी अभिप्रेरणा से परिप्लावित 'रत्नांक' पत्रिका के इस नवीन अंक की मैं सम्पूर्ण संपादन मण्डल को बधाई व शुभकामनाएं प्रदान करता हूँ।

सुरेश पाटनी
उपाध्यक्ष
कॉलेज प्रबंधन समिति

संदेश

हमारी ज्ञान परम्परा के प्राचीनतम स्वरूप से अधुनातन संस्कृति में कौशल को अहम स्थान प्राप्त रहा है। प्रत्यक्षतः ज्योतिषीय गणनाओं से लेकर आज के इस ए.आई. युग तक यदि कौशल न होता तो मानव, मन की गति से अपने कार्यों को सम्पादित न कर पाता। इसी अवधारणा को पुष्ट करने हेतु 'रत्नांक' का यह 'ज्ञान कौशल का संगम भारत' अंक सर्वजनों को समर्पित है।

'रत्नांक' के इस नव अंक हेतु मैं सम्पादक, संपादन मण्डल, संकाय सदस्यों व विद्यार्थियों को हृदय की अतलतम गहराईयों से कोटिशः बधाई शुभकामनाएं प्रदान करता हूँ।

सी.ए. सुभाष अग्रवाल
निदेशक एवं सचिव
कॉलेज प्रबंधन समिति

संदेश

भारत सरकार ने अपनी नई शिक्षा नीति में कौशल एवं व्यावसायिक शिक्षा पर बल दिया है। इसके मूल में उद्देश्य है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली में पुरातन से ही व्यक्ति की कुशलता व व्यवसाय का घनिष्ठ अर्न्तसम्बध रहा है। यदि एक विद्यार्थी को मूलभूत शिक्षा के साथ-साथ कौशल शिक्षा प्रदान की जाये तो निश्चित ही वह उस कौशल से स्वयं को व्यवसाय से जोड़कर अपने भविष्य का निर्माण कर सकता है।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए 'रत्नांक' पत्रिका का यह अंक 'ज्ञान कौशल का संगम भारत' संपादन मंडल का विनम्र प्रयास है। अनवरत आठवें वर्ष में प्रकाशन के सोपान पर प्रगतिशील 'रत्नांक' पत्रिका के सम्पूर्ण संपादन मण्डल व महाविद्यालय परिवार को बधाई व शुभकामनाएं प्रदान करता हूँ।

डॉ. शैलेन्द्र पाटनी
प्राचार्य

सम्पादकीय

आर्यवर्त अर्थात् भारत के साहित्य, इतिहास, ज्ञान, सभ्यता, संस्कृति के पन्नों को पलटकर देखते हैं तो ज्ञान के अथाह सागर में विविधता गोते लगाती हुई दृष्टिगोचर है। प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा की समृद्धि कहीं छुपी हुई नहीं है। आप विचार करें उस सभ्यता का ज्ञान कितना सूक्ष्म व गहन था कि उन्होंने धरती के गर्भ से लेकर अंतरिक्ष में होने वाली हलचल का हालचाल समय व प्रकृति के साथ संयोजित कर स्पष्ट कर देते थे। धरती की स्थिरता जहाँ शेषनाग से बताते हैं वहीं अंतरिक्ष का संतुलन ग्रह उपग्रहों व गुरूत्वाकर्षण से स्पष्ट करते हैं। किसी भी जीव को पंचतत्व से संचरित बताकर ज्ञान की चरमसीमा से अवगत करवाकर आर्यो ने अपनी ज्ञान की ज्ञान आभा को पुष्टित किया है।

इस ज्ञान यात्रा के क्रमिक विकास में कौशल ज्ञान का विशिष्ट योगदान रहा है। जब ज्ञान को प्रायोगिक स्वरूप में संस्थापित करने की संकल्पना का ताना बाना बुना जाता है तब कुशलता से कौशल निखरकर आता है। यह शाश्वत है कि वर्णव्यवस्था समाज के इसी पक्ष का सुंदर उदाहरण है। एक समाज को चलाने के लिए चार वर्णो का निर्धारण रहा है। उसी प्रकार से ज्योतिष, शिक्षा, चिकित्सा, आयुर्वेद, गणना, कृषि, अभियांत्रिकी व औद्योगिकी क्षेत्रों में कौशल ज्ञान व्यावसायिकता की ओर बढ़ने की संकल्पना साकार करने का हौसला प्रदान करता है।

इसी विषय को पुष्ट करने हेतु वर्तमान शिक्षा व कार्यप्रणाली में कौशल शिक्षा पर बल दिया जा रहा है। इससे एक विद्यार्थी अपनी आधारभूत शिक्षा के साथ-साथ कौशल ज्ञान प्राप्त कर अपने जीवन को व्यवसाय व सेवा से जोड़कर दिशा प्रदान कर सके। ज्ञान, कौशल व व्यवसाय तीनों का संगम हमें गुरूकुल परम्परा का स्मरण करवाता है जिसमें एक गुरू अपने शिष्य को सभ्यता, समाज, संस्कृति, ज्ञान, ध्यान, अध्यात्म, शासन, प्रशासन, रीति नीति, व्यवसाय आदि की शिक्षा से सामज को एक श्रेष्ठ नागरिक प्रदान करते थे। आज उसी परम्परा को समृद्ध करने की दृष्टि से कौशल व व्यावसायिक शिक्षा देने पर बल दिया जा रहा है जिसका प्रमाण गुरूकुल व कुलगुरू शब्द जुड़ रहे हैं। हमारे विद्यार्थियों में यह भावना पुष्ट हो सके इन्हीं सम्पन्न विचारों के साथ 'ज्ञान, कौशल का संगम भारत' विशेषांक आप सबको सादर समर्पित करते हुए गर्वानुभूति है।

डॉ. हुकम सिंह चम्पावत
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग

सामाजिक वर्ण व्यवस्था में कौशल दर्शन

भारतीय संस्कृति में सामाजिक वर्ण व्यवस्था अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इनका गहन अध्ययन, चिंतन, मनन व मंथन करने पर प्रतीत होता है कि इस व्यवस्था में एक गहन दर्शन छुपा हुआ है। वर्तमान परिदृश्य भले ही इसे जाति व्यवस्था मान बैठा हो परंतु सनातन संस्कृति में यह कर्मक्षेत्र है जो आज भी परिलक्षित है। हमारे पुरातन आदर्शो ने एक राज्य व श्रेष्ठ राष्ट्र के निर्माण हेतु एक व्यवस्था को परिकल्पित किया था जिसमें उनका समृद्ध विचार यह था कि एक श्रेष्ठ राष्ट्र तभी बन सकता जब राष्ट्र की व्यवस्था में एक वर्ण शिक्षा, ज्ञान, ध्यान, अध्यात्म दूसरा वर्ण राष्ट्र की रक्षा व सुरक्षा, तीसरा वर्ण व्यापार, व्यवसाय आर्थिक उन्नति व चौथा वर्ण अन्य समस्त कार्य व्यापार से युक्त कार्य करेंगे।

सनातन संस्कृति में वर्ण व्यवस्था की इस परिचय परिकल्पना के पश्चात् गहराई से अध्ययन करें तो स्पष्ट हैं कि इस व्यवस्था में कौशल ज्ञान दृष्टिगोचर है। अध्ययन - अध्यापन कौशल, अस्त्र - शस्त्र, चलन - चालन कौशल, निर्माण विनिर्माण कौशल, रख - रखाव कौशल आदि कार्य आज व्यवस्था विशेष में है एवं पूर्व में भी रही है। अतः यह कहा जा सकता है कि नई शिक्षा नीति में जो नवीन बदलाव हुए हैं वे अपनी प्राचीन संस्कृति का संवाहक स्वरूप है। शिक्षा के साथ कौशल ज्ञान की परम्परा अनवरत थी एवं रहेगी जिससे राष्ट्र का निर्माण संचालन सहजता से होगा। वर्ण व्यवस्था में कौशल के दर्शन प्रत्येक पीढ़ी के विकास के लिए उत्कृष्ट उदाहरण एवं आवश्यकता है। इसे सहेजने एवं समझने की आवश्यकता है।

महावीर कोठारी
कोषाध्यक्ष,
कॉलेज प्रबंधन समिति

अन्न के कण और आनंद के क्षण

महाकवि कालिदास रास्ते में थे। प्यास लगी। वहाँ एक पनिहारिन पानी भर रही थी।

कालिदास बोले : माते ! पानी पिला दीजिए बड़ा पुण्य होगा।

पनिहारिन बोली : बेटा, मैं तुम्हें जानती नहीं। अपना परिचय दो। मैं पानी पिला दूंगी।

कालिदास ने कहा : मैं मेहमान हूँ, कृपया पानी पिला दें।

पनिहारिन बोली : तुम मेहमान कैसे हो सकते हो ? संसार में दो ही मेहमान है - पहला धन और दूसरा यौवन। इन्हें जाने में समय नहीं लगता। सत्य बताओ कौन हो तुम ?

तर्क से पराजित कालिदास अवाक् रह गए

कालिदास बोले : मैं सहनशील हूँ, अब आप पानी पिला दें।

पनिहारिन ने कहा : नहीं, सहनशील तो दो ही हैं - पहली, धरती जो पापी -पुण्यात्मा सबका बहुत सहती है, उसकी छाती चीरकर बीज बो देने से भी अनाज के भंडार देती है, दूसरे पेड़ जिनको पत्थर मारो फिर भी मीठे फल देते हैं। तुम सहनशील नहीं। सच बताओ तुम कौन हो।

(कालिदास मूर्छा की स्थिति में आ गए और तर्क-वितर्क से झल्ला उठे।)

कालिदास बोले मैं हठी हूँ।

पनिहारिन बोली : फिर असत्य। हठी तो दो ही है - पहला नख और दूसरे केश, कितना भी काटो बार-बार निकल आते हैं। सत्य कहें कौन हैं आप?

(कालिदास अपमानित और पराजित हो चुके थे)

कालिदास ने कहा : फिर तो मैं मूर्ख ही हूँ।

पनिहारिन ने कहा : नहीं, तो मूर्ख कैसे हो सकते हो ? मूर्ख तो दो ही हैं - पहला राजा जो बिना योग्यता के भी सब पर शासन करता है और दूसरा दरबारी पंडित जो राजा को प्रसन्न करने के लिए गलत बात पर भी तर्क करके उसको सही सिद्ध करने की चेष्टा करता है।

(कुछ बोल न सकने की स्थिति में कालिदास वृद्धा पनिहारिन के पैर पर गिर पड़े और पानी की याचना में गिड़गिड़ाने लगे)

माँ ने कहा : शिक्षा से ज्ञान आता न कि अहंकार से। तूने शिक्षा के बल पर प्राप्त मान और प्रतिष्ठा को ही अपनी उपलब्धि मान लिया और अहंकार कर बैठा इसलिए मुझे तुम्हारे चक्षु खोलने के लिए यह स्वांग करना पड़ा।

कालिदास को अपनी गलती समझ में आ गई और भरपेट पानी पीकर वे आगे चल पड़े।

सीख : विद्वता पर कभी घमंड ना करें। घमंड विद्वता को नष्ट कर देता है। दो चीजों को कभी व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए - अन्न के कण और आनंद के क्षण को।

सी.ए. सुभाष अग्रवाल
निदेशक एवं सचिव

हर्षिता गोयल यू.पी.एस.सी. ए.आई.आर. 2nd टॉपर 2024 : साक्षात्कार

राजगढ़ - चूरू के प्रसिद्ध व्यवसायी भादरमल बैरासरिया (गोयल) की पौत्री हर्षिता गोयल ने अपने पिता श्री गोविंद गोयल की अभिप्रेरणा से बड़ोदरा, गुजरात में रहते हुए अध्ययन कर 22 अप्रेल को घोषित यू.पी.एस.सी. परिणामों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए ऑल इण्डिया रैकिंग में दूसरा स्थान प्राप्त कर घर, परिवार, समाज का नाम रोशन किया जिसका हर बेटी, हर माँ व हर महिला को गर्व है। वाणिज्य का अध्ययन कर सी.ए. बनने के बाद भी पिताजी द्वारा प्रदत्त प्रशासनिक सेवा सीख को मार्गदर्शन मान यू.पी.एस.सी. का स्वप्न संजोकर उसे पूरा करने पर जब हर्षिता गोयल को मिडियाकर्मियों ने चुनौतियों के संदर्भ में पूछा तब उन्होंने बताया कि बड़े स्वप्न, बड़ी मंजिल हो तो कई चुनौतियाँ आती है उनसे न घबराते हुए आगे बढ़ना ही प्रथम सफलता है।

उन्होंने अपनी नम आँखों से बताया कि प्रथम चुनौती मेरे जीवन की यह रही कि 14 वर्ष की आयु में ही मेरी माताजी श्रीमती मायादेवी गोयल का देवलोक गमन हो गया। मेरे लिए यह वज्रपात था, परन्तु मैं धन्यवाद देती हूँ मेरे पिताजी एवं परिजनों को जिन्होंने मुझे टूटने न दिया। बचपन से ही मेरी भावना ग्राउण्ड लेवल पर कुछ करने की रही थी। 2021 में चार्टर्ड अकाउन्टेन्सी को पूर्ण करने के बाद पिताजी की प्रेरणा से 2022 में मैंने यू.पी.एस.सी एग्जाम का पहला अटेम्पट दिया था लेकिन मैं प्री परीक्षा क्लीयर नहीं कर पाई। तत्पश्चात् अहमदाबाद में रहते हुए दूसरा एवं तीसरा अटेम्पट दिया। जहाँ मुझे दिल्ली जैसा विद्यार्थी वातावरण प्राप्त हुआ। दूसरे अटेम्पट की असफलता के पश्चात् भी न थकते हुए तीसरे अटेम्पट में करेन्ट अफेयर्स, रिजनिंग, जी.के. पर फोकस किया व सौभाग्य से प्री क्लीयर हो गया। अब मेरा हौसला मेन्स एग्जाम के लिए आसमान सी ऊँचाईयाँ छू रहा था। राईटिंग पर ज्यादा फोकस करते हुए चार टेस्ट सीरिज तैयार कर पिछले पाँच वर्षों के प्रश्नों को हल करने का अनवरत् प्रयास कर तैयारी की। हालांकि इस दौरान मुझे टाइफाईड भी हो गया, परन्तु तैयारी को जारी रखा जिससे मेरा मेन्स एग्जाम क्लीयर हो गया। सबसे बड़ी चुनौती इंटरव्यू होती है जिसका फार्म भरते समय बहुत सावधानी रखनी होती है। हर बिन्दु को फार्म में भरते समय काफी रिसर्च की एवं रिसर्च के अनुकूल फार्म में करेंट अफेयर्स का ध्यान रखकर फार्म भरा। साक्षात्कार से पूर्व की पढ़ाई को मैंने टाईम मैनेजमेंट के आधार पर रखा एवं जरूरी नहीं कि 12-16 घंटे पढ़ाई करूँ, बस खुद के साथ जस्टिस करते हुए 8 घंटे में अच्छी स्टडी कर पा रही थी। जब भी ब्रेक लेने की आवश्यकता होती जरूर लेती। सोशल मिडिया भी यूज किया परन्तु इसमें मैंने स्टडी को ही प्राथमिकता में रखा। इस डिजिटल युग में सोशल मिडिया पर नॉलेज पेज फॉलो किये, चैटजीपीटी से टॉपिक लिखकर आन्सर पूछती थी जिससे मुझे काफी मदद मिली।

7 अप्रेल, को मेरा इन्टरव्यू था जो पूर्णतः इकोनॉमी व करन्ट अफेयर्स से युक्त रहा जिसमें इंटरनेशनल लेवल पर ट्रम्प की टैरिफ पॉलिसी व इण्डिया के एडवान्टेज पर प्रश्न पूछे गये। चीन-इण्डिया स्टार्टअप पर चर्चा हुई एवं गुजरात इण्डस्ट्री पर सवाल हुए जिन्हें मैं निरंतर न्यूज पेपर में पढ़ती थी। मेरा इन्टरव्यू बहुत अच्छा रहा एवं परिणाम आपके सामने है।

मैं युवाओं को इस सन्दर्भ में यही कहना चाहती हूँ कि चुनौतियों का सामना आप ईमानदारी, मेहनत, लगन व निष्ठा से करें तो सफलता अवश्य मिलती है। इसमें स्थान मेटर नहीं करता बस छोटे-छोटे कदम बढ़ाइये एवं आगे चलकर यह कदम अचीवमेन्ट में अवश्य बदलते हैं। इस रेंक के आधार पर मेरे कंधों पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। वूमेन अपलिफ्टमेंट, स्लम एरियाज के बच्चों हेतु कार्य करना मेरी प्राथमिकता रहेगी। इस मुकाम के बाद भी सबसे धरातल स्तर पर जुड़कर रहूँ यही मेरा प्रयास है।

मैं सम्पूर्ण गर्व के साथ पुनः इस सफलता का श्रेय अपने पिताजी को देती हूँ। धन्यवाद...

संकलन - सी.ए. सुभाष अग्रवाल
निदेशक एवं सचिव

मछली की भूल

मछली ने बचपन छोड़कर यौवन की दहलीज़ पर कदम रखा ही था, अब माता-पिता की बन्दिशें उसे पैरों में पड़ी हुई बेड़ियाँ लगती थी। वो माँ-बाप की नज़रों से छुप कर कभी कभार किनारे पर जाती थी, एक दिन वो किनारे पर सुरक्षित गहराई से झील के बाहर की दुनियाँ का अवलोकन कर रही थी कि उसे एक बगुले ने पुकारा। ये उसके लिए मित्रता का आमन्त्रण था। युवा मछली ने उसका आमन्त्रण स्वीकार नहीं किया परन्तु एकदम मना भी नहीं किया।

उसके बाद सुरक्षित दूरी से बात और मुलाक़ात की शुरुआत हो गयी। धीरे-धीरे ये मुलाक़ातें आए दिन की बातें हो गयी। बातें सच्ची मित्रता की, आसमान की ऊंचाइयों की, बुलन्दियों को छूने की, सहयोग, सफ़लता की बातें। युवा मन पर ऐसे विचार जल्दी गहरा असर करते हैं।

मछली पर भी असर पड़ा, उसे लगता था कि जैसे माता-पिता उसे रंग-बिरंगी दुनिया की तमाम खुशियों से वंचित रखना चाहते हैं, अब माता-पिता से दबी ज़ुबान से शिकायत की, बगुलों की तरह उनके साथ आसमान में उड़ान भरने की बात की तो पिता ने डाँट कर चुप करा दिया।

फिर माँ ने प्यार से समझाया कि बेटी, ये दुनियाँ जो दूर से इतनी खूबसूरत और रंग-बिरंगी नज़र आती है, वास्तविकता में उतनी ही बुरी, क्रूर और स्वार्थी है, ये जो सर से टखनों तक सफ़ेद पंखों वाले बगुले हैं, इनका दिल उतना ही काला है, इनके इन बेरहम काले पंजों ने हमारी कई पीढ़ियों को तुम्हारी परदादी, परनानी को नोचा है ये सफेद लिबास पहने कोई नेकदिल महात्मा नहीं बल्कि केवल पंखों से ही सफेद हैं, काले दिल वाले शैतान हैं ये!

बेचारी मछली को ये अतिश्योक्ति लगी, लगा कि माँ उसे डरा रही है, बात आयी गयी हो गई। मछली ने बगुले से मिलना बंद नहीं किया। बगुला उसे आये दिन अपने साथ आसमान में उड़ने का ऑफर देता, एक दिन मछली ने मन में कुछ सोचा, विचारा और बगुले के साथ आसमान में उड़ान भरने का निर्णय ले लिया।

मन में डर तो था किन्तु उसे लगा कि जब वो लौटकर माँ-बाप समेत सबको आसमान की बुलंदियाँ छूकर आने की खबर सुनाएगी तो सब उसे सराहेंगे, उसकी मिसाल देंगे। उसकी सफलता पीढ़ियों से चली आ रही बगुलों से बेपनाह नफरत को एक ही झटके में समाप्त कर देगी। वो उस जगह तक जायेगी जहाँ पर धरती और आसमान मिलकर एक हो जाते हैं और वापस आकर वहाँ का आँखों देखा हाल अपनी मछली सहेलियों को बताएगी, वो साबित कर देगी कि माता-पिता की ये बात गलत है।

माँ-बाप की तमाम नसीहतों को दरकिनार करके मछली एक शाम अपने मित्र बगुले के साथ आसमान में उड़ान भरने के लिए तैयार हो गई, अपनी कल्पनाओं में सुनहरे सपने बुनती हुई बगुले के पास पहुँच गयी, बगुला उसे पंजे में दबाकर उड़ चला। अभी पानी से निकले ज्यादा वक्त न बीता था कि मछली को घुटन महसूस हुई, उसे साँस लेने में परेशानी हो रही थी, उसने बगुले से वापस झील में पहुँचाने, पानी में जाने के लिए आग्रह किया, अपना दम घुटने की शिकायत की। किन्तु अब बगुले ने अपना असली रंग दिखाना शुरू कर दिया। बगुला उसे लेकर एक सूखी चट्टान पर पहुँचा, वहाँ उसके जैसे तमाम बगुले थे। बगुले मिल कर मछली को अपनी चोंचों में दबाकर उछाल रहे थे और उसके जिन्दा शरीर से छोटी छोटी बोटियाँ नोंचकर खा रहे थे। मछली को अपनी माँ की नसीहतें बहुत याद आ रही थी, उसे विश्वास हो गया था कि माँ की नसीहतें सच थी, मछलियों की बगुलों से कभी मित्रता नहीं हो सकती, लेकिन अफ़सोस अब कोई लाभ नहीं था। मछली की चीखें और बचाव की पुकार सुनने वाला वहाँ कोई भी नहीं था। मछली को निपटाने के बाद बगुलों ने अट्टहास किया, अपने पंख और चोंच व पंजों पर लगा खून साफ किया, पुनः ज़ल्द मिलने का वायदा किया, उड़कर फिर झील के किनारे जा पहुँचे, फिर वही मित्रता आदि की कहानियाँ किसी और को सुनाने के लिए...

जयश्री अग्रवाल
सदस्य, प्रबंधन समिति

जीव विज्ञान की दृष्टि से ज्ञान, कौशल का संगम भारत

भारतीय परंपराओं में जीव विज्ञान का समृद्ध ज्ञान सदियों से अस्तित्व में रहा है। आयुर्वेद, योग, कृषि विज्ञान और जैव विविधता संरक्षण जैसे क्षेत्रों में हमारे पूर्वजों ने जो ज्ञान अर्जित किया, वह आज भी वैज्ञानिक अनुसंधान का आधार बना हुआ है। आज के दौर में, जब विज्ञान और प्रौद्योगिकी का युग अपने चरम पर है, तब जीव विज्ञान के ज्ञान और कौशल का संगम भारत को आत्मनिर्भर और विश्वगुरु बनने की दिशा में आगे ले जा रहा है।

प्राचीन भारत में जीव विज्ञान की जड़ें - आयुर्वेद, जिसे 'जीवन का विज्ञान' कहा जाता है, जीव विज्ञान का ही एक विस्तृत रूप है। कुछ प्रमुख प्राचीन भारतीय ग्रंथ, जो जीव विज्ञान से जुड़े हैं:-चरक संहिता, सुश्रुत संहिता इसके जीवंत उदाहरण साथ ही ऋग्वेद और अथर्ववेद - इनमें वनस्पतियों, जीव-जंतुओं और कृति के अन्य पहलुओं का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से वर्णन किया गया है। कृषि विज्ञान में भी भारत ने हजारों वर्षो पहले ही फसल चक्र, मृदा संरक्षण, जैविक खाद और सिंचाई प्रणाली विकसित कर ली थी। इस ज्ञान को आधुनिक विज्ञान के साथ जोड़कर भारत में हरित क्रांति संभव हो पाई।

आज के दौर में जीव विज्ञान ने भारत को स्वास्थ्य, पर्यावरण और कृषि के क्षेत्र में कई उपलब्धियाँ दिलाई हैं। कोरोना महामारी के समय भारत में बनी स्वदेशी वैक्सीन इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

जीव विज्ञान और कौशल विकास - आज के तकनीकी युग में केवल ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि कौशल (स्किल) का विकास भी उतना ही आवश्यक है। सरकार द्वारा चलाई जा रही 'स्किल इंडिया' और 'मेक इन इंडिया' जैसी योजनाएँ बायोटेक्नोलॉजी, जैव चिकित्सा अनुसंधान और पर्यावरणीय विज्ञान में युवाओं को प्रशिक्षित करने में सहायक हैं। भारत सरकार ने 'स्किल इंडिया' और 'मेक इन इंडिया' जैसी योजनाएँ शुरू की हैं, जो युवाओं को बायोटेक्नोलॉजी, जैव चिकित्सा अनुसंधान और पर्यावरण विज्ञान में प्रशिक्षित कर रही हैं।

कुछ प्रमुख कौशल जो जीव विज्ञान के क्षेत्र में आवश्यक हैं :

- प्रयोगशाला तकनीक - दवा निर्माण और शोध के लिए आवश्यक।
- आनुवांशिक कोडिंग और डेटा विश्लेषण - बायो इन्फॉर्मेटिक्स के क्षेत्र में अनिवार्य।
- नैनोबायोलॉजी - चिकित्सा विज्ञान और दवा निर्माण के लिए उपयोगी।
- पर्यावरणीय अध्ययन और जैव विविधता संरक्षण - सतत विकास और पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने में सहायक।

भारत में 'अटल इनोवेशन मिशन' और 'बायोटेक्नोलॉजी इंडस्ट्री रिसर्च असिस्टेंस काउंसिल' (BIRAC) जैसे सरकारी प्रयासों से नवाचार को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

निष्कर्ष - यदि हम पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक विज्ञान और तकनीकी कौशल के साथ जोड़कर आगे बढ़ें, तो आने वाले वर्षो में भारत न केवल जैव प्रौद्योगिकी बल्कि संपूर्ण विज्ञान और नवाचार के क्षेत्र में विश्वगुरु बन सकता है। आत्मनिर्भर भारत की दिशा में जीव विज्ञान का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहेगा और आने वाले वर्षो में यह क्षेत्र और भी प्रगति करेगा।

विश्वजीत जारोली
विभागाध्यक्ष, प्राणीशास्त्र विभाग

रामराज्य और भारतीय लोकतंत्र : संविधान में निहित एक सांस्कृतिक चेतना

भारतीय लोकतंत्र की कल्पना एक ऐसी राज्य व्यवस्था के रूप में की गई है जिसमें समता, स्वतंत्रता, बंधुत्व और न्याय जैसे मूल्य केन्द्रीय भूमिका निभाते हैं। यदि इन मूल्यों के आदर्श स्वरूप को एक सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में देखा जाए, तो 'रामराज्य' उसकी उत्कृष्ट अभिव्यक्ति बनकर उभरता है। रामराज्य भारतीय सांस्कृतिक चेतना में एक ऐसी व्यवस्था के रूप में अंकित है, जहाँ शासन प्रजाहित को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है। भगवान श्रीराम का जीवन और उनके राज्य संचालन के सिद्धांत आज भी सुशासन, नैतिकता और सामाजिक समरसता के मानक के रूप में उद्धृत किए जाते हैं। वह शासन व्यवस्था जहाँ राजा स्वयं को कानून से ऊपर नहीं मानता बल्कि राज्य के प्रत्येक नागरिक के लिए न्याय और समान अधिकार सुनिश्चित करता है।

राजनीतिक विज्ञान में 'रूल ऑफ लॉ' एक प्रमुख सिद्धांत है, जो कहता है कि कोई भी व्यक्ति, चाहे वह कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, कानून से ऊपर नहीं होता। यही भाव श्रीराम के शासन में भी परिलक्षित होता है, जहाँ उन्होंने अपने व्यक्तिगत हितों की बलि देकर प्रजा की अपेक्षाओं को प्राथमिकता दी। उनका शासन न केवल न्यायसंगत था, बल्कि करुणा और समानता से युक्त भी था।

भारतीय संविधान के निर्माण के समय डॉ. भीमराव अंबेडकर द्वारा प्रस्तुत संविधान के मूल स्वरूप को सजाने के लिए नंदलाल बोस और उनकी टीम द्वारा भारतीय इतिहास, संस्कृति और धर्म के महत्त्वपूर्ण प्रतीकों को अंकित किया गया। संविधान के भाग तीन, जो मौलिक अधिकारों से संबंधित है। मौलिक अधिकार, जिनमें समानता का अधिकार (अनुच्छेद 14), भेदभाव से मुक्ति (अनुच्छेद 15), जीवन और स्वतंत्रता का अधिकार (अनुच्छेद 21) शामिल हैं, वस्तुतः रामराज्य की अवधारणाओं से मेल खाते हैं। श्रीराम के जीवन में वर्णित अनेक प्रसंगकृ जैसे निषादराज से मित्रता, शबरी के बेरों को ग्रहण करना, विभीषण को शरण देना - इन मूल्यों की प्रत्यक्ष पुष्टि करते हैं।

श्रीराम का चरित्र सामाजिक समावेशिता का भी उदाहरण है। आज के लोकतांत्रिक भारत में जब हम समावेशी लोकतंत्र की बात करते हैं, तो यह राम के व्यवहार और दृष्टिकोण से प्रेरणा ले सकता है।

आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में जब हम 'वेलफेयर स्टेट' या 'कल्याणकारी राज्य' की अवधारणा पर बात करते हैं, तो उसमें नागरिकों की सामाजिक सुरक्षा, समान अवसर और गरिमामय जीवन सुनिश्चित करना शासन की जिम्मेदारी बनती है। राजनीतिक वैज्ञानिकों के अनुसार, एक आदर्श शासन वह होता है जहाँ सत्ता का केंद्र 'व्यक्ति' नहीं बल्कि 'प्रजा' होती है। रामराज्य किसी एक राजा के 'राज' की सफलता नहीं, बल्कि एक ऐसी व्यवस्था की स्थापना है जो सभी के हित में हो, सभी की बात सुने और न्याय करे।

निष्कर्ष - भारतीय संविधान अपने मूल में एक आधुनिक, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक दस्तावेज है, किन्तु इसकी आत्मा भारतीय सभ्यता और संस्कृति के आदर्शो से अछूती नहीं है। श्रीराम का चित्र संविधान के मौलिक अधिकारों के अध्याय में केवल एक धार्मिक प्रतीक नहीं, बल्कि उस न्यायप्रिय, समावेशी और मानवीय शासन प्रणाली का संकेत है जिसे भारतीय लोकतंत्र में प्रतिपादित किया गया है। इसकी परिकल्पना हमें एक ऐसे भारत की ओर प्रेरित करती है जहाँ संविधान के आदर्श, राम के आदर्शो से मिलकर एक समतामूलक, न्यायपूर्ण और प्रगतिशील समाज की रचना करें।

डॉ. रूचि मिश्रा
विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग

नई शिक्षा नीति 2020 एवं भारतीय ज्ञान प्रणाली

भारतीय दृष्टिकोण वृहद्, व्यापक और सतत विकास का आधार है जो जनमानस के सभी पक्षों के कल्याण के लिए सदैव प्रयासरत है। बदलते दौर में यह महत्वपूर्ण है कि हम अपनी विरासत की व्यापक ज्ञान प्रणाली को स्वीकार कर उसे गौरवान्वित करने में अपना प्रभावी योगदान देवें। इसी क्रम में भारतीय नई शिक्षा नीति 2020 हमारे प्राचीन और शाश्वत भारतीय ज्ञान और चिंतन की समृद्ध परंपरा को एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में स्वीकार करती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली ज्ञान, विज्ञान और जीवन-दर्शन का एक समृद्ध समावेश है, जो अनुभव, अवलोकन, प्रयोग और गहन विश्लेषण से विकसित हुई है। इस परंपरा ने हमारी शिक्षा, कला, प्रशासन, न्याय, स्वास्थ्य, विनिर्माण और वाणिज्य को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। इसके अतिरिक्त, भारतीय ज्ञान प्रणाली भारत की शास्त्रीय और अन्य भाषाओं को भी समृद्ध करता रही है, जो कि पाठ्य, मौखिक और कलात्मक परंपराओं के माध्यम से परिलक्षित होती हैं। 'भारत का ज्ञान' न केवल प्राचीन भारत की उपलब्धियों और चुनौतियों को समाहित करता है, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण और जीवन के अन्य सभी क्षेत्रों में भारत की भविष्य की आकांक्षाओं को भी प्रतिबिंबित करता है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली का उद्देश्य इसे हमारे अतीत से जोड़ते हुए वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों को हल करने के लिए उपयोग में लाना है। यह प्रणाली एक अनवरत ज्ञान संचरण परंपरा का प्रतिनिधित्व करती है। निःसंदेह ज्ञान और कौशल परम्परा का संगम भारत और विश्व की समकालीन समस्याओं को हल करने में अपनी प्रभावपूर्ण भूमिका अदा करता है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से शिक्षा में सम्मिलित करने की योजना में जनजातीय ज्ञान, पारंपरिक और स्वदेशी शिक्षण पद्धतियां सम्मिलित है। साथ ही, यह गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन, योग, वास्तुकला, चिकित्सा, कृषि, अभियांत्रिकी, भाषा विज्ञान, साहित्य, खेल, शासन, राजनीति और संरक्षण से संबंधित विषयों को भी एकीकृत स्वरुप में प्रस्तुत करता है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली को केन्द्रित करते हुए राष्ट्रीय स्तर पर विशेष पाठ्यक्रम जैसे जनजातीय औषधीय पद्धतियां, वन प्रबंधन, पारंपरिक (जैविक) कृषि, प्राकृतिक खेती और इसके अतिरिक्त, 'भारतीय ज्ञान प्रणाली' पर वैकल्पिक पाठ्यक्रम भी उपलब्ध कराए जाने की व्यापक योजना हैं।

इस तथ्य को स्वीकार करना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि भारतीय ज्ञान प्रणाली भारतीय विविधता का प्रत्यक्ष अनुभव एवं 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' पहल जैसी योजनाओं को गति प्रदान करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति यह मानती है कि भारत की समृद्ध विविधता का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है। इसके लिए विद्यार्थियों को विभिन्न क्षेत्रों की शैक्षणिक यात्राओं पर भेजा जाना चाहिए। इससे न केवल पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि विद्यार्थियों को भारत के विविध संस्कृति, परंपराओं और ज्ञान प्रणालियों को समझने और सराहने का अवसर भी मिलेगा। इसी को ध्यान में रखते हुए 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' योजना के अंतर्गत देशभर में 100 पर्यटन स्थलों की पहचान की जा रही है, जहां शैक्षणिक संस्थानों के विद्यार्थी इन स्थलों के इतिहास, वैज्ञानिक योगदान, परंपराओं, और स्वदेशी साहित्य व ज्ञान का अध्ययन करेंगे और भारतीय ज्ञान प्रणाली की विस्तृत विवेचना को समझ सकेंगे।

नई शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए शिक्षा मंत्रालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद और उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रति दृढसंकल्पित होकर कई गतिविधियाँ भी शुरू जा चुकी है।

सारांशतः भारतीय ज्ञान प्रणाली का पुनरुद्धार और इसे मुख्यधारा की शिक्षा में सम्मिलित करना भारत के उज्ज्वल भविष्य की ओर एक बड़ा कदम है।

डॉ. मितेश जुनेजा
विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग

मानव जीवन का प्रबल पक्ष गणित विषय

गणित मानव जीवन के हर पहलू को पक्ष प्रबल करता है। यह न केवल एक विषय है, बल्कि ज्ञान और कौशल का एक अनूठा संगम है। गणित हमें तार्किक सोच, विश्लेषणात्मक क्षमता और समस्याओं को हल करने का कौशल प्रदान करता है। आज के आधुनिक युग में, जहाँ विज्ञान और प्रौद्योगिकी का बोलबाला है, गणित का महत्व और भी बढ़ गया है। भारत जैसे देश में, जहाँ गणित की समृद्ध परंपरा रही है, इस विषय का अध्ययन और इसका उपयोग हमें वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने में मदद करता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, गणित की उपयोगिता शिक्षा, तकनीक, वैज्ञानिक अनुसंधान, वित्तीय प्रबंधन, और रोजमर्रा की समस्याओं के समाधान में देखी जा सकती है।

प्राचीन काल से ही भारतीय गणितज्ञों ने इस विषय में अद्वितीय योगदान दिया है। आर्यभट्ट, जिन्होंने शून्य की अवधारणा को विकसित किया, ब्रह्मगुप्त, जिन्होंने बीजगणित के सिद्धांतों को आगे बढ़ाया, और श्रीनिवास रामानुजन, जिन्होंने संख्या सिद्धांत में अद्भुत खोजें कीं, भारतीय गणित के गौरवशाली इतिहास के प्रतीक हैं। इन महान विद्वानों ने न केवल गणित को समृद्ध किया, बल्कि यह भी साबित किया कि गणित के बिना विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास संभव नहीं है।

आज के डिजिटल युग में, गणित के बिना विज्ञान और तकनीक की कल्पना भी नहीं की जा सकती। गणित हमें जटिल समस्याओं को सरल तरीके से समझने और उनका समाधान खोजने में मदद करता है। उदाहरण के लिए कंप्यूटर प्रोग्रामिंग, साइबर सुरक्षा, और बिग डेटा एनालिटिक्स जैसे क्षेत्रों में गणितीय सूत्रों का व्यापक उपयोग होता है। बैंकिंग प्रणाली, क्रेडिट स्कोरिंग और निवेश प्रबंधन में भी गणितीय गणनाएँ आवश्यक होती हैं। चिकित्सा शोध, रोग निदान और चिकित्सा उपकरणों के विकास में गणित की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उपग्रहों की कक्षा निर्धारण, रॉकेट लॉन्चिंग और खगोल विज्ञान में भी गणित अपरिहार्य है। साथ ही, गणित सभी प्रमुख प्रतियोगी परीक्षाओं और उच्च शिक्षा पाठ्यक्रमों का महत्वपूर्ण भाग है।

भविष्य में गणित का महत्व और भी बढ़ने वाला है। जैसे-जैसे तकनीकी विकास तेजी से हो रहा है, गणित की मांग भी बढ़ती जा रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग, क्वांटम कंप्यूटिंग और स्पेस टेक्नोलॉजी जैसे क्षेत्रों में गणित की भूमिका अहम होगी। भारत जैसे देश के लिए, जहाँ युवाओं की संख्या अधिक है, गणित में निपुणता हमें वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक प्रमुख खिलाड़ी बना सकती है।

निष्कर्ष-

गणित केवल एक विषय नहीं बल्कि जीवन जीने की कला है, यह ज्ञान और कौशल का एक ऐसा संगम है जो हमें न केवल शैक्षणिक रूप से बल्कि व्यावहारिक रूप से भी सशक्त बनाता है। यह हमारे दैनिक जीवन से लेकर उच्च तकनीकी क्षेत्रों तक हर जगह उपयोगी है। भारत की गणितीय परंपरा और आधुनिक युग की आवश्यकताओं को देखते हुए, गणित का अध्ययन और इसका उपयोग हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

डॉ. प्रवीण देवड़ा
विभागाध्यक्ष, गणित विभाग

भारतीय ज्ञान परंपरा

भारत को सदैव विश्व गुरु का दर्जा दिया गया है हमें यह अप्रतिम अलंकरण प्राप्त है तो निःसंदेह है हमारी आधुनिक उपलब्धियां के कारण नहीं अपितु हमारे प्राचीन उन्नत गौरवशाली संस्कृति तथा विज्ञान के कारण है किसी भी श्रेष्ठ प्राचीन तथ्यों को प्राचीन में प्रासंगिक कहकर उनका उपहास करना नहीं चाहिए अपितू नूतन समय में वे तार्किक अनूपम तथ्य हमारे लिए किस प्रकार प्रासंगिक व कल्याणकारी हो सकते हैं। यह शोध का एक अत्युतम विषय है।

जिस प्रकार शोध का एक अर्थ रि-सर्च अर्थात पुनः खोज है उसी प्रकार हम भी नाम्ना जीवित हमारे प्राचीन संस्कारों व संस्कृति को पुनर्जीवित करके यथार्थ में जीवन में समाविष्ट करना होगा। देखिए पंच महायज्ञों का कितना सुंदर चित्रण इस श्लोक के माध्यम से किया गया है-

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञ पितृयज्ञस्तू तर्पनं ।

होमो देवो बाली बलिर्भूत्तो नृयज्ञो अतिथिपूजनम।।

आयुर्वेद- चरक द्वारा लिखित चरक संहिता, सुश्रुत की सुश्रुत संहिता तथा वाग्भट्ट द्वारा लिखित अष्टांग ह्रदय को आयुर्वेद त्रयी ग्रंथ कहा जाता है। आयुर्वेद की परिभाषा देते हुए कहा कि 'हिताहितं सुखंदुखंमायुस्तस्य हिताहितं मानं च तच्च यदोक्तमायुर्वेद स उच्यते।' अर्थात आयु के हित तथा अहित के लिए उसके सुख-दुख का वर्णन मान (उचित मात्रा) सहित जहाँ हो उसे आयुर्वेद कहते हैं।

शिक्षा - हमें पुनः प्राचीन भारत की शिक्षा पद्धति को जागृत करने की आवश्यकता है 'सा विद्या या विमुक्तये' सिद्धांत पर आधारित थी। हमें प्राचीन वैदिक शिक्षा प्रणाली, नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों में प्रचलित शिक्षा प्रणालियों का शोध करना होगा। एक बात स्पष्ट है कि प्राचीन शिक्षा प्रणाली को वर्तमान समय में यथावत् लागू नहीं किया जा सकता, किंतु यह शोध एक अत्यंत उपयोगी विषय हो सकता है कि प्राचीन सिद्धांतों को अपना कर किस प्रकार शिक्षा को ज्ञानोन्मुख, मूल्यवान और रोजगारोन्मुख बनाया जा सके।

उपनिषद् व पुराण - उपनिषद् ज्ञान की अमूल्य निधि है। उपनिषद में प्रतिपादित सृष्टि उत्पत्ति सिद्धांत, तैत्तिरीय उपनिषद् का पंचकोश सिद्धांत, विभिन्न संवाद, आत्मा की जागृत, सुषुप्ति, स्वप्न व तुरीय अवस्थाएं, यत् पिंडे तत् ब्रह्मांडे का वैज्ञानिक सिद्धांत, स्थूल सूक्ष्म कारण शरीर, कर्म सिद्धांत आदि पर जितना शोध किया जाए उतनी ही नवीन में वैज्ञानिक अवधारणाएं प्राप्त होती है। भागवत् पुराण के अनुसार ''जब संसार अंधकार से उबरा तो जल में प्रारंभिक मूल प्रकृति से वनस्पति का बीज उत्पन्न हुआ जिससे पौधों को जीवन मिला, पौधों से कीटाणु उत्पन्न हुए जो जीवानुक्रम में कीड़े,सांप, कछुआ, पक्षी, पशु आदि अवस्थाओं से होते हुए मानव रूप प्राप्त किए। पौधों में जीवों की उत्पत्ति का यह विशुद्ध वैदिक ज्ञान है।'' ऋषि मनु के अनुसार - ''सभी जीव अपनी पुरानी पीढ़ियों के जीवित रहने की क्षमता को अपना कर आगे बढ़ते रहे।'' 16वीं सदी के वैज्ञानिक चार्ल्स डार्विन ने इसे डार्विन विकासवाद प्रणाली का नाम दिया।

ज्यामिति के कई महत्वपूर्ण नियमों की खोज बोधायन द्वारा करना, शून्य तथा दशमलव प्रणाली का जनक भारत होना, पिंगलाचार्य के छंद नियमों का एक तरह से द्विअंकिय (बाइनरी) गणित का कार्य करना, महर्षि भारद्वाज का विमान शास्त्र, वेदांत ज्योतिष में सूर्य, चंद्रमा नक्षत्र, सौरमंडल के ग्रह और ग्रहण के विषय में जानकारी भास्कराचार्य द्वारा सिद्धांत शिरोमणि ग्रंथ में गुरुत्वाकर्षण का उल्लेख करना, शताब्दियों पूर्व नौवहन की कला का जन्म होना, भगवान राम द्वारा यमुना पार करने के लिए नौका का प्रयोग करना, महर्षि कणाद द्वारा डाल्टन से पूर्व परमाणुवाद के सिद्धांत का प्रतिपादन, वेदांत दर्शन में पंचीकरण की प्रक्रिया द्वारा सृष्टि उत्पत्ति का वैज्ञानिक, अगस्त्य संहिता में आश्चर्यजनक रूप से विद्युत उत्पादन संबंधी सूत्रों का मिलना।

विलियम्स, अलेक्जेंडर कनिंघम, ह्वेसांग आदि विदेशी विद्वानों ने भारतीय संस्कृति का अध्ययन किया तथा नासा जैसे संस्थान द्वारा हमारे ग्रंथों व परंपराओं का अध्ययन कर समृद्ध हो रहे हैं। किंतु हमारी स्थिति उसे कस्तूरी मृग के समान हो चली है जिसे स्वयं की सुगंध का ज्ञान नहीं है, अतः हमें सुप्तावस्था भंग कर पुनः विश्व गुरु पदवी प्राप्त करनी है तो हमारी ज्ञान परंपरा को पुनर्जीवित करना होगा।

सुरेश कुमार शर्मा
विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

महाकुंभ 2025 : धार्मिक-आर्थिक परिप्रेक्ष्य

महाकुंभ 2025 प्रयागराज में आयोजित किया गया, जो ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसे 'मानवता का सबसे बड़ा मेला' भी कहा जाता है जिसमें करोड़ों श्रद्धालु पवित्र संगम में स्नान के लिए आते हैं। महाकुंभ 2025 का आयोजन प्रयागराज, उत्तर प्रदेश में 13 जनवरी से शुरू होकर छह सप्ताह तक चला जिसमें लगभग 65 करोड़ श्रद्धालु सम्मिलित हुए।

कुंभ मेला 2025 न केवल आस्था का महाकुंभ है बल्कि अर्थव्यवस्था का भी संगम है। महाकुंभ 2025 ने न केवल श्रद्धालुओं के लिए बल्कि प्रयागराज और संपूर्ण भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान किया। महाकुंभ 2025 एक वैश्विक स्तर का धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन है जिसने भारतीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया। इस आयोजन ने पर्यटन, व्यापार, रोजगार, बुनियादी ढांचे और सांस्कृतिक विरासत पर गहरा प्रभाव डाला। सरकार इस आयोजन के लिए बुनियादी ढांचे, स्वच्छता, परिवहन और सुरक्षा के व्यापक इंतजाम करती है जिससे क्षेत्र का संपूर्ण विकास होता है।

महाकुंभ 2025 के आयोजन के लिए केंद्र और राज्य सरकारों ने लगभग रू. 6,400 करोड़ (64 अरब रुपये) से अधिक का बजट आवंटित किया, जिससे स्थानीय व्यापार, पर्यटन, और रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई। स्थानीय व्यापारियों, खाद्य विक्रेताओं और हस्तशिल्प कारीगरों को इस आयोजन से विशेष लाभ हुआ जिससे उनकी आय में वृद्धि हुई।

महाकुंभ 2025 में देश-विदेश से लाखों श्रद्धालुओं और पर्यटकों के आगमन से पर्यटन उद्योग को बढ़ावा मिला। इस आयोजन के दौरान भारतीय रेलवे ने 98 विशेष ट्रेनों का संचालन किया जो 3,300 यात्राएं करती थी, ताकि तीर्थयात्रियों को सुविधा हो। इसके अलावा डिजिटल भुगतान प्रणालियों के उपयोग में वृद्धि हुई जिससे वित्तीय समावेशन को प्रोत्साहन मिला।

मुख्य प्रभाव :

1. पर्यटन और आतिथ्य उद्योगरू महाकुंभ के दौरान, प्रयागराज में 66 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने भाग लिया, जिससे होटल, रेस्तरां और अन्य आतिथ्य सेवाओं में भारी वृद्धि हुई।
2. खुदरा और परिवहन क्षेत्र : श्रद्धालुओं की बड़ी संख्या ने परिवहन, खुदरा व्यापार और स्थानीय बाजारों में आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया।
3. स्वास्थ्य सेवाएँ: आयोजन के दौरान स्वास्थ्य सेवाओं में निवेश से स्थानीय स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार हुआ जिससे भविष्य में भी लाभ मिलेगा।

निष्कर्ष - महाकुंभ 2025 न केवल धार्मिक महत्व का एक आयोजन है बल्कि आर्थिक और प्रशासनिक क्षमता को भी दुनिया के सामने लाने वाला महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह आयोजन भारत के धार्मिक धरोहर के साथ-साथ राज्य की वृद्धि और विकास में भी योगदान दे रहा है। यह आयोजन भारत के धार्मिक धरोहर के साथ-साथ राज्य की वृद्धि और विकास में भी योगदान दे रहा है।

महाकुंभ 2025 के समापन के बाद उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर, यह स्पष्ट है कि इस आयोजन ने उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था पर महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव डाला है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के अनुसार, इस महाकुंभ से राज्य की जीडीपी में लगभग 1 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जो लगभग रू. 3 लाख करोड़ का आर्थिक योगदान है।

डॉ. राधा गुप्ता
विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग

अधूरी बातें

कुछ बातें दिल में रह जाती हैं
आँखों से बनके बूँदें बह जाती हैं।
जो कह न सके वो लफ़्ज़ बनकर
रातों की तन्हाई में सह जाती हैं।

कुछ चेहरे यादों में रह जाते हैं
हर मोड़ पर चुपके से आ जाते हैं।
जिनसे बिछड़ना मंजूर न था
वही अजनबी बनकर रह जाते हैं।

कुछ ख्वाब अधूरे रह जाते हैं
हर पल बस उन्हें ही सजाते हैं।
मगर वक्त की राहें कुछ और थी
हम बस रास्ते बदलते जाते हैं।

दिन चाहता है सब कुछ कह दें
मगर जुबाँ खामोश रह जाती है।
हर दर्द मुस्कान में ढलकर
बस दिल के किसी कोने में छुप जाती है।

निकिता प्रजापत
बी.कॉम., द्वितीय वर्ष

महाकुंभ संगम प्रयागराज

महाकुंभ संगम प्रयागराज में आयोजित होने वाला एक हिन्दू तीर्थयात्रा उत्सव है जो गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों के संगम पर होता है। यह कुंभ मेले का सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा है और दुनिया की सबसे बड़ी धार्मिक सभा मानी जाती है। महाकुंभ मेला एक महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक आयोजन है जो हिंदु धर्म में आस्था और ज्ञान के संगम का प्रतीक है यह मेला साधु-संयासियों, भक्तों और आध्यात्मिक साधकों के लिए अवसर जहाँ वे अपने पापों का क्षमा करने, आत्म, शुद्धि प्राप्त करने और मोक्ष की प्राप्ति के लिए एकत्रित होते है।

पापों का क्षमा और आत्म शुद्धि, मोक्ष की प्राप्ति, ईश्वर से जुड़ाव, सामाजिक एकता। महाकुंभ में साधु-संयासी अपने ध्यान और साधना के माध्यम से आध्यात्मिक ऊर्जा को बढ़ाते हैं, भक्तों को प्रेरित करते हैं। महाकुंभ में विभिन्न धर्म, जाति, वर्ग और समुदायों के लोग एकत्र होते हैं सामाजिक एकता और सद्भाव की भावना को बढ़ावा देते है। महाकुंभ भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत का सार प्रस्तुत करता है देश लोकाधार को दर्शाता है।

निकिता कंवर
बी.ए., प्रथम वर्ष

शिक्षा, कौशल का संगम : भारत

भारत युवाओं का देश है जहाँ जनसंख्या का बड़ा हिस्सा युवा वर्ग से संबंधित है। ऐसे में शिक्षा और कौशल विकास का संगम हमारे देश के भविष्य को उज्ज्वल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। केवल किताबी ज्ञान से आज के युग में सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती, जब तक उसमें व्यावहारिक कौशल न जोड़ा जाए। आज का भारत एक ऐसे दौर में है जहाँ शिक्षा और कौशल का समन्वय समय की माँग बन गया है। केवल डिग्री प्राप्त करना अब पर्याप्त नहीं है, बल्कि उस ज्ञान को व्यावहारिक जीवन में कैसे उपयोग किया जाए, यह समझना भी आवश्यक है। यही कारण है कि शिक्षा और कौशल का संगम आज के भारत को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने की दिशा में एक मजबूत कदम है।

शिक्षा व्यक्ति के मानसिक, सामाजिक और नैतिक विकास का आधार होती है। यह हमें सोचने, समझने और निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है। वहीं, कौशल विकास व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाता है। यदि किसी छात्र को शिक्षा के साथ-साथ उसकी रुचि और क्षमता के अनुसार तकनीकी, व्यावसायिक या किसी अन्य क्षेत्र का कौशल भी सिखाया जाए, तो वह न केवल अपने लिए बल्कि समाज और देश के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

भारत सरकार ने इस दिशा में अनेक प्रयास किए हैं, जैसे 'स्किल इंडिया मिशन', 'प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना' आदि। इन योजनाओं का उद्देश्य युवाओं को रोजगार के लिए तैयार करना है। जब शिक्षा और कौशल विकास साथ-साथ चलते हैं, तो व्यक्ति में आत्मविश्वास बढ़ता है और वह वैश्विक प्रतिस्पर्धा में टिक सकता है। इन योजनाओं का उद्देश्य यही है कि शिक्षित युवा कौशल युक्त बनें और अपने जीवन को बेहतर बना सकें। शिक्षा और कौशल का यह संगम भारत को वैश्विक मंच पर एक नई पहचान दे सकता है। यदि हर विद्यार्थी को उसकी रुचि के अनुसार कौशल सिखाया जाए तो वह आत्मनिर्भर बन सकता है। यही आत्मनिर्भर भारत की ओर एक ठोस कदम होगा। इन योजनाओं का उद्देश्य युवाओं को तकनीकी, व्यावसायिक और व्यावहारिक प्रशिक्षण देना है, ताकि वे अपने जीवन में सफल हो सकें और रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकें।

अतः यह आवश्यक है कि हमारे शिक्षण संस्थान केवल किताबी ज्ञान तक सीमित न रहें, बल्कि विद्यार्थियों को व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दें। तभी हम 'नए भारत' के निर्माण की ओर एक सार्थक कदम बढ़ा पाएंगे। इसलिए हमें शिक्षा को केवल परीक्षा पास करने का माध्यम न मानकर, उसे जीवन निर्माण का साधन बनाना चाहिए और उसमें कौशल विकास को भी अनिवार्य रूप से जोड़ना चाहिए।

अमित दाधीच
प्रशासनिक अधिकारी

प्रगति

कला, विज्ञान और तकनीक का त्रिकोण
कला है भावों की भाषा, विज्ञान है तर्क की बात
तकनीक से जुड़कर ये तीनों, रचते नव संसार की सौगात।

रंगो सी सजी है कल्पना, विज्ञान से मिले उड़ान
तकनीक के संग हो नवाचार, बढ़े सृजन की पहचान।
चित्रकार के ब्रश में विज्ञान, संगीत में तरंगो का ज्ञान
तकनीक से सुरों की धारा, गूँजें दूर, बने विज्ञान का सम्मान।

अंतरिक्ष की ऊँचाई छू ली, तकनीक ने बढ़ाया हाथ,
कला ने सपने देखे, विज्ञान ने दिए सौगात।
इस त्रिकोण की शक्ति महान, बदल दे जग का रूप ,
कला, विज्ञान और तकनीक से, बनेगा प्रगति का स्वरूप।

रेणुका सैनी
बी.ए., द्वितीय वर्ष

उद्यमिता

सपनों के पंखों से उड़ती हूँ, नया रास्ता मैं खोजती हूँ।
संघर्ष से डरती नहीं, जीत की राह पर चलती हूँ।

नवाचार की अग्नि में जलती हूँ, आँधी में भी में बलवती हूँ।
हर चुनौती को स्वीकार करती हूँ,
उद्यमिता की राह पर चलती हूँ।

लक्ष्य मेरा ऊँचा है, सफलता मेरा सपना है।
मेहनत और लगन से, उद्यमिता का मैं हूँ ज्ञानी।

हर कदम पर खतरा है, पर मैं डरती नहीं।
उद्यमिता की राह पर, मैं अपना भाग्य लिखती हूँ।

सलोनी विजयवर्गीय
बी.कॉम., द्वितीय वर्ष

कॉमर्स से कौशल

कॉमर्स के ज्ञान से कई कौशल विकसित हो सकते हैं, जैसे वित्तीय लेखाकंन, व्यवसाय विश्लेषण और विपणन इसके अतिरिक्त कई व्यवसाय क्षेत्र है जो कॉमर्स के ज्ञान के साथ शुरू किए जा सकते हैं।

कॉमर्स के ज्ञान से विकसित होने वाले कौशल :

- कॉमर्स के ज्ञान से हम वित्तीय रिर्पोट्र्स, बहीखातों को समझने और प्रबंधित करने में सक्षम होंगे।
- आप बाज़ार की स्थिति का विश्लेषण, ग्राहकों की आवश्यकताओं की पहचान, व्यवसाय की रणनीती विकसित करने में सक्षम हो।
- कॉमर्स के ज्ञान से आपको व्यापार में बेहतर संचार और बातचीत करने में मदद मिलेगी।
- आप व्यवसाय परियोजनाओं को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने और समय पर पूरा करने में सक्षम होंगे।
- आप वेबसाइट्स, सोशल मीडिया और ईमेल मार्केटिंग के माध्यम से ऑनलाइन व्यवसाय को बढ़ावा देने में सक्षम होंगे।
- कॉमर्स के ज्ञान से शुरू किए जाने वाले व्यवसाय।
- आप अपने उत्पादों या सेवाओं को ऑनलाइन बेच सकते हैं जैसे ई-कॉमर्स वेबसाइट।
- आप विभिन्न विषयों पर सलाह दे सकते हैं।
- आप विभिन्न विषयों पर ऑनलाइन शिक्षण दे सकते हैं।

सुहानी विजयवर्गीय
बी.कॉम., द्वितीय वर्ष

कौशल से महिलाओं को रोजगार के अवसर

कौशल से महिलाओं में रोजगार एवं आत्मनिर्भरता की वृद्धि होती है। इससे उन्हें आर्थिक स्वतंत्रता मिलती है, जिससे वे घर के महत्वपूर्ण निर्णयों में भागीदारी करने लगती हैं। नियमित आय के माध्यम से वे बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और परिवार के अन्य मुद्दों पर स्वयं निर्णय ले सकती हैं। कार्यस्थल पर उन्हें नए लोगों से बातचीत करने, नई तकनीकों को सीखने और नवाचार अपनाने का अवसर मिलता है, जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है। रोजगार से महिलाएँ न केवल खुद के लिए बल्कि अन्य घरेलू सहायिकाओं को काम देकर ''कार्य प्रदाता'' भी बनती हैं। उनके सामाजिक संपर्क और जागरूकता में वृद्धि होती है और उनके पास अक्सर आभूषण, भूमि या घर जैसे भौतिक संसाधन भी अधिक होते हैं। इसके साथ ही वे अपने जीवन में कार्य एवं जीवन संतुलन बनाए रखने की कोशिश करती हैं जिससे उन्हें जीवन को संतुलित रूप से जीने की कला आती है। इस तरह, रोजगार महिलाओं के व्यक्तित्व, निर्णय क्षमता, और सामाजिक सम्मान को मज़बूत करता है।

हालाँकि रोजगार अनेक लाभ प्रदान करता है, लेकिन इससे जुड़ी कई सीमाएँ भी हैं। महिलाएँ दिनभर नौकरी और घर के कार्यो में व्यस्त रहती हैं, जिससे उन्हें अपने परिवार, विशेषकर बच्चों को पर्याप्त समय नहीं मिल पाता। इसका प्रभाव उनके पारिवारिक रिश्तों और मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। अधिकतर महिलाएँ 'गिल्ट' (अपराधबोध) की भावना से जूझती हैं क्योंकि वे पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरा नहीं कर पातीं। काम और घर की दोहरी जिम्मेदारी उन्हें बोझ बना देती है। इसके अलावा, वे सामाजिक आयोजनों और रिश्तों में भी पिछड़ जाती हैं क्योंकि उनके पास समय और ऊर्जा की कमी होती है। इस प्रकार, रोजगार से उपजी थकान और समयाभाव महिलाओं के निजी जीवन को प्रभावित करता है।

रोजगार के माध्यम से महिलाओं के लिए कई नए अवसर सामने आते हैं। सरकार और गैर-सरकारी संस्थानों द्वारा संचालित कौशल विकास कार्यक्रम जैसे कि प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, डिजिटल साक्षरता, सिलाई, ब्यूटी पार्लर, कुकिंग आदि में प्रशिक्षण देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है। साथ ही उद्यमिता सहायता जैसे स्वयं सहायता समूह, महिला उद्यमिता प्लेटफार्म, स्टार्टअप योजनाएँ, और माइक्रो फाइनेंस जैसी योजनाएँ महिलाओं को खुद का व्यवसाय शुरू करने में मदद कर रही हैं। दूरस्थ कार्य प्लेटफॉर्म जैसे फायवर, अपवर्क, इंटर्नशाला आदि के माध्यम से महिलाएँ घर बैठे कार्य कर सकती हैं, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएँ। इसके अलावा, सरकारी नौकरियों में आरक्षण और प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए मुफ्त कोचिंग भी उन्हें सार्वजनिक क्षेत्र में आगे बढ़ने के अवसर प्रदान कर रही हैं। इस प्रकार रोजगार महिलाओं को तकनीकी, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में नई दिशाएँ प्रदान करता है।

डॉ. वर्षा जैन
सहायक आचार्य, वाणिज्य विभाग

भारत में कौशल और उद्यमिता नवाचार : शिक्षा संदर्भ में

कौशल विकास आज वैश्विक आवश्यकता है। यह माना जाता है कि मात्र ज्ञान से व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का विकास का आधार सुदृढ़ नहीं किया जा सकता है अतः कौशल विकास भी भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। शिक्षा और कौशल विकास अंतर्संबंधित है इसी लिए भारत में कौशल विकास और उद्यमिता को प्रोत्साहित करने की प्रतिबद्धता को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद और शिक्षा मंत्रालय जैसे प्रमुख संस्थानों द्वारा रणनीतिक शैक्षिक सुधारों और पहलों के माध्यम से मजबूती दी जा रही है।

नई शिक्षा नीति 2020 शिक्षा प्रणाली को केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित न रखकर कौशल विकास और उद्यमिता सोच को भी बढ़ावा देती है। यह नीति व्यावसायिक शिक्षा को मुख्यधारा की शिक्षा में शामिल करने पर जोर देती है जिससे छात्र सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक कौशल भी प्राप्त कर सकें। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग उच्च शिक्षा को उद्योग की आवश्यकताओं के साथ जोड़कर सुस्थापित करने हेतु प्रयासरत है, जिससे रोजगार क्षमता बढ़ाई जा सकेंगी और वैश्विक स्तर पर देश की कौशल विकास के प्रयासों को रेखांकित किया जा सकेगा। इसके तहत राष्ट्रीय कौशल योग्यता ढांचे के तहत कौशल-आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए दिशा निर्देश जारी किए गए हैं, इसके अतिरिक्त, विश्वविद्यालयों में प्रौद्योगिकी व्यवसाय इनक्यूबेटर और उद्यमिता विकास प्रकोष्ठ की स्थापना को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है ताकि स्टार्टअप्स और नवाचारों को बढ़ावा दिया जा सके।

अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद तकनीकी संस्थानों में उद्यमिता पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। परिषद द्वारा छात्रों को तकनीक-आधारित स्टार्टअप्स स्थापित करने और रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए स्टार्टअप नीति बनाई गयी है। इसके अलावा, शिक्षा मंत्रालय के नवाचार प्रकोष्ठ के सहयोग से इन्वेस्टर नेटवर्क लॉन्च किया गया है, जिससे शैक्षणिक संस्थानों को नवाचार केंद्रों में बदला जा सके। यह नेटवर्क स्टार्टअप्स को आवश्यक संसाधन, मार्गदर्शन, प्रारंभिक पूंजी और संभावित निवेशकों तक पहुँच प्रदान करता है।

शिक्षा मंत्रालय कौशल विकास को शैक्षिक ढांचे में शामिल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सहयोग से, मंत्रालय ने इनक्यूबेशन सेंटर और उद्यमिता प्रकोष्ठों की स्थापना का प्रयास किया है, जिससे छात्रों को अपने नवाचारों को व्यावसायिक उद्यमों में बदलने का अवसर मिलेगा। इन्वेस्टर नेटवर्क इस प्रयास का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जो अकादमिक समुदाय के भीतर नवाचार और उद्यमिता की संस्कृति को बढ़ावा देता है।

भारत मण्डपम, नई दिल्ली में स्थित एक विश्व स्तरीय सम्मेलन और प्रदर्शनी केंद्र, कौशल विकास और उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में उभरा है। यहाँ 'स्टार्टअप महाकुंभ' जैसे कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं, जहाँ देशभर के उद्यमी और स्टार्टअप्स ने न केवल अपने नवाचारों को प्रदर्शित किया है बल्कि संभावित निवेशकों से जुड़ने का अवसर भी प्रदान किया है। निःसंदेह इस प्रकार के आयोजन नवोदित उद्यमियों को पहचान, नेटवर्किंग और आवश्यक संसाधन प्राप्त करने का अवसर प्रदान करते हैं।

इन प्रयासों से स्पष्ट होता है कि देश में भविष्य में, शिक्षा और उद्योग के बीच तालमेल को और मजबूत करने पर ध्यान दिया जाएगा और पाठ्यक्रमों को उभरती हुई तकनीकों के अनुसार संशोधित करने, उद्योग और शिक्षाविदों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने और स्टार्टअप्स के लिए वित्तीय सहायता तक पहुँच को आसान बनाने के प्रयास जारी रहेंगे।

निष्कर्षतः- ऐसी योजनाएं और प्रयास भारत के शैक्षिक परिदृश्य को बदल रही हैं। इन पहलों के माध्यम से कौशल विकास और उद्यमिता को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया जा रहा है जिससे युवा पीढ़ी को नौकरी देने वालों के बजाय नौकरी बनाने वाला बनाया जा सके।

डॉ. स्मिता पंचौली
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग

ज्ञान, कौशल भारत की प्रगति का आधार

ज्ञान किसी भी समाज और राष्ट्र की उन्नति का मूल आधार होता है। यह केवल किताबी शिक्षा तक सीमित नहीं है बल्कि व्यावहारिक और नैतिक शिक्षा भी इसमें शामिल होती है। भारत प्राचीन काल से ही ज्ञान का केंद्र रहा है। यहाँ तक्षशिला और नालंदा जैसे विश्वविद्यालय थे, जहाँ दुनियाभर के विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थे।

संस्कृत में एक प्रसिद्ध श्लोक है :

'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।'

यह श्लोक दर्शाता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली केवल व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं, बल्कि पूरे समाज के कल्याण के लिए कार्य करती है। आधुनिक युग में भी भारत ने ज्ञान के क्षेत्र में वैश्विक पहचान बनाई है। विज्ञान, गणित, चिकित्सा और सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) जैसे क्षेत्रों में भारतीय विद्वानों ने अहम योगदान दिया है। आज भारत के पास आईआईटी, आईआईएम, इसरो और विभिन्न शोध संस्थान हैं, जो उच्च गुणवत्ता की शिक्षा और अनुसंधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

भारत की परंपरागत शिक्षा प्रणाली गुरुकुलों पर आधारित थी, जहाँ छात्रों को केवल सैद्धांतिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि नैतिकता, अनुशासन और व्यावहारिक शिक्षा भी दी जाती थी। यह प्रणाली छात्र को जीवन के हर पहलू के लिए तैयार करती थी। आधुनिक समय में शिक्षा प्रणाली में कई बदलाव हुए हैं, जिससे छात्रों को विज्ञान, तकनीक और प्रबंधन के क्षेत्र में नए अवसर मिले हैं। ऑनलाइन शिक्षा, ई-लर्निंग और डिजिटल क्लासरूम के माध्यम से ज्ञान अर्जित करने के तरीके भी बदले हैं।

किसी भी राष्ट्र की प्रगति में कौशल (स्किल) का उतना ही महत्वपूर्ण योगदान होता है जितना कि ज्ञान का। केवल सैद्धांतिक ज्ञान होने से कोई भी व्यक्ति या समाज पूर्ण नहीं बन सकता, जब तक उसमें उस ज्ञान को व्यावहारिक रूप से लागू करने की क्षमता न हो।

भारत में कौशल विकास की ओर हाल के वर्षों में विशेष ध्यान दिया गया है। सरकार ने 'स्किल इंडिया मिशन' और 'प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना' जैसी योजनाएँ शुरू की हैं, जिनका उद्देश्य युवाओं को उद्योगों के लिए तैयार करना है।

भारत एक युवा देश है, जहाँ 65 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या 35 वर्ष से कम उम्र की है। यह युवा शक्ति तभी राष्ट्र की उन्नति में सहायक हो सकती है जब उन्हें सही कौशल और प्रशिक्षण दिया जाए। आईटी, स्वास्थ्य सेवा, निर्माण, कृषि और अन्य उद्योगों में योग्य श्रमिकों की आवश्यकता होती है, जिसे पूरा करने के लिए कौशल विकास आवश्यक है। आईटी और सॉफ्टवेयर, हस्तशिल्प और लघु उद्योग, कृषि और जैव प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य और चिकित्सा क्षेत्र, विनिर्माण और निर्माण क्षेत्र आदि है।

निष्कर्ष - भारत का भविष्य ज्ञान और कौशल के सही तालमेल पर निर्भर करता है। यदि हम शिक्षा प्रणाली को आधुनिक बनाते हैं और व्यावसायिक प्रशिक्षण को प्राथमिकता देते हैं, तो हम एक आत्मनिर्भर और सशक्त भारत का निर्माण कर सकते हैं। 'ज्ञान और कौशल एक सिक्के के दो पहलू हैं। जब दोनों का संगम होता है, तो राष्ट्र समृद्धि की ओर बढ़ता है।'

डॉ. पूजा बागडी
विभागाध्यक्ष, गृह विज्ञान विभाग

ज्ञान कौशल का संगम भारत

प्राचीन भारत में गुरूकुल प्रणाली के माध्यम से शिक्षा दी जाती थी। यहाँ वेद, उपनिषद, आयुर्वेद, योग, गणित, खगोलशास्त्र और वास्तुशास्त्र जैसी विद्याऐं सीखई जाती थी।

आर्यभट्ट, बहमगुप्त और भास्कराचार्य जैसे महान गणितज्ञों ने शून्य, दशमलव प्रणाली और खगोलशास्त्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिये।

आज भारत तेजी से डिजिटल युग में प्रवेश कर चुका है, जहाँ आधुनिक शिक्षा और तकनीकी कौशल विकास को विशेष प्राथमिकता दी जा रही है। भारत में सूचना प्रौद्योगिकी (आई.टी) और नवाचार के क्षेत्र में महाशक्ति बन चुका है। जैसे बेंगलुरू को ''भारत का सिलिकान वैली'' कहा जाता है। अंतरिक्ष मिशन भारत द्वारा किए जा रहे हैं।

भारत ज्ञान और कौशल का केन्द्र बनकर उभर रहा है। प्राचीन काल से चली आ रही विद्या और आधुनिक विज्ञान तथा तकनीक समन्वय देश को एक नई ऊँचाई पर ले जा रहा है। शिक्षा नवाचार स्टार्टअप्स और तकनीकी प्रगति के माध्यम से भारत आने वाले वर्षो में एक वैश्विक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर है।

फाल्गुनी कंवर
एम.ए., पूर्वार्द्ध भूगोल

अहसास

एक ही मोती समुद्र में
चाहे जितनी बार में
ढूंढ़ों उसे सागर में
एक नया एहसास हो
मत पकड़ो भीड़ को
बस मन में रखो जीत को
लड़ना हे तो खुद से लड़ो
क्यों ढूंढ़ते हो किसी प्रतिद्वंदी को
मत जुड़ो उस मुसीबत से
जिसकी काबिलियत आपको गिराती हो,
चलो चलते चलो वहाँ से,
जहाँ मन की आत्मा बुलाती हो।

पलक शर्मा
बी.एससी.(गणित), प्रथम वर्ष

हे मानव

हे मानव! ये सृष्टि डरते-डरते कह रही है,
प्रकृति की दुर्दशा देख, थोड़ा रूक जा।

हे मानव! कुदरत को नाराज मत कर,
अभी भी वक्त है, जरा संभल जा
प्रकृति की दुर्दशा देख, थोड़ा रूक जा ।

हे मानव! जरा सोच,
प्रकृति के साथ कितना खिलवाड़ किया,
जरा अब तो, थोड़ा रूक जा।

हे मानव! तेरा दम घुट रहा है,
तो अब कैसी शिकायत
अब तो थोड़ा रूक जा।

हे मानव! सुन प्रकृति का इशारा,
जैसे कह रहे है कि, कहीं देर ना हो जाएं ,
जरा अब तो थोड़ा रूक जा।

तुम गालिब से नज्म लिखा दो, या
तानसेन से
राग गंवा लो, मेरी माँ से बढ़कर
अगर कोई कलाकार हो
तो मुझे दिखा दो।

ज्योति शर्मा
शिक्षा विभाग

ज्ञान का गहनतम स्वरूप कुम्भ स्नान

भारत जहाँ ज्ञान की गंगा बहती है और कौशल के हिमालय खड़े हैं। यह धरती केवल एक देश नहीं, बल्कि एक अद्भुत सभ्यता है और हाल ही में आयोजित महाकुंभ के अद्भुत सामाजिक संगम की याद इसे और भी गौरवान्वित कर देती है। भारत की ज्ञान परंपरा सदियों से विश्व को प्रकाश देती आई है। वेदों में छुपे गणित के रहस्य, उपनिषदों में ब्रह्मांड के सिद्धांत और आयुर्वेद में स्वास्थ्य के नियम आज भी प्रासंगिक हैं। शून्य का आविष्कार, दशमलव प्रणाली और ज्योतिष की गणना ने भारत को विज्ञान का पितामह बना दिया।

भारत का कौशल केवल हाथों की कुशलता नहीं, बल्कि मन की गहराई है। मंदिरों की नक्काशी, वस्त्रों की बुनाई और संगीत की लय यहाँ के कौशल का प्रतीक हैं। चाहे वह बनारस की साड़ी हो, राजस्थान की ब्लॉक प्रिंटिंग या मैसूर की रेशम की चमक, भारत का कौशल हर रूप में मंत्रमुग्ध करता है।

हाल ही में आयोजित महाकुंभ ने भारत की एकता और अद्भुत सामाजिक संगम को दुनिया के सामने प्रस्तुत किया। यह वह अवसर था जब हर जाति, हर धर्म और हर वर्ग के लोग एक साथ आए और गंगा की पवित्र धारा में डुबकी लगाई। महाकुंभ केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं बल्कि भारत की सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है। यहाँ ज्ञान और कौशल का संगम सिर्फ व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामूहिक रूप में दिखाई देता है। महाकुंभ ने साबित कर दिया कि भारत की ताकत उसकी विविधता में निहित है।

आज का भारत ज्ञान और कौशल के इस संगम को नई ऊँचाइयों पर ले जा रहा है। आईआईटी और आईआईएम जैसे संस्थान दुनिया को भारतीय प्रतिभा का लोहा मनवा रहे हैं। सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग, अंतरिक्ष अनुसंधान और डिजिटल इंडिया जैसे अभियान भारत को एक नए युग में ले जा रहे हैं। चंद्रयान और मंगलयान जैसे मिशन ने साबित कर दिया कि भारत का ज्ञान और कौशल अब अंतरिक्ष तक पहुँच चुका है।

अनुज काबरा
सहायक आचार्य, रसायन विज्ञान विभाग

गाँव

अपने गाँवों को
मैंने शहर बनते देखा है
खेतों को उजड़ते
उनमें पत्थरों को बसते देखा है।

जहाँ उगा करती थी
हरियाली खुशहाली सुगंध
वहाँ बे सुगंध निर्जीव सी
दीवारों को बढ़ते देखा है।

अपने गाँवों को
मैंने शहर बनते देखा है
चलती थी ज्ञान की बयार
अब नई हवा को चलते देखा है।

संस्कार के साक्षी बने
चौपालों को इतिहास बनते देखा है
समय दर समय अपने गाँवों को
मैंने शहर बनते देखा है।

नम्रता अग्रवाल
प्रशासनिक विभाग

ज्ञान किरण

'पहली किरण' ज्ञान का प्रकाश
सुबह की पहली किरण
रोशनी फैलाए ज्ञान की
उम्मीदें जगाए युवा दिल में,

'दूसरी किरण' शक्ति शिक्षा की
गाँव शहर में शिक्षा का दीप जलाए।

'तीसरी किरण' हुनर का है संगम
दिल में सपना और हाथ में हुनर
जीवन को अपना बनाए
कौशल की राहें

'अगली किरण' रोजगार का संगम
तकनीक का जादू हो
रोजगार की राहें हो।
नए युग की दस्तक
हर युवा को मंजिल हो।

सरगम काठात
बी.ए.बी.एड., द्वितीय वर्ष

हमारा भारत

भारत एक समृद्ध देश है जो अपने आप को बदलते समय के साथ ढालता आया है । आजादी पाने के बाद भारत ने बहुआयामी सामाजिक और आर्थिक प्रगति की है साथ ही अब दुनिया के सबसे औद्योगीकृत देशों की श्रेणी में भी इसकी गिनती की जाती है ।

दुनिया की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में वर्ष 2047 तक विकसित भारत बनाने का भारत का सपना तेज़ी से विकसित हो रहे रोज़गार बाज़ार की मांगों को पूरा करने के लिए अपने युवाओं को प्रभावी ढंग से कौशल प्रदान करने पर टिका है । हाल ही में पेश किए गए केंद्रीय बजट 2024-25 ने इस प्राथमिकता को उजागर किया है, जहाँ शिक्षा, रोज़गार और कौशल पहलों के लिए पर्याप्त धन आवंटित किया गया है।

भारत सरकार ने कौशल विकास को देश के समग्र विकास के सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक माना है। भारत मे कौशल विकास की विभिन्न चुनौतियों के बावजूद, सरकार ने नीतियों और पहलों के पुनर्गठन की दिशा में काम किया है।

जागृति जैन
एम. ए. प्रीवियस, भूगोल

संगम

भारत की धरती पर, जहाँ ज्ञान खिलता है,
वहाँ कौशल भी अपने रंग दिखाता है।

मन और हाथों का संगम यहाँ,
बनाता है भविष्य, चमकता हर जहाँ है।

प्राचीन ग्रंथों और शिल्पों से सीख,
हर कहानी में छुपा है सत्य का पथ।

कौशलपूर्ण हाथ और विचारों की गहराई,
हर क्षेत्र में प्रगति की है चाहत सही।

यह यात्रा है हृदय और मस्तिष्क की,
हर बंधन को तोड़, हम बढ़ते जाएँ।

ज्ञान और कौशल का यह अद्भुत मेल,
जीवन में बढ़े, सपने सच हों खेल।

सिमरन बानो
बी.एससी. (गणित) द्वितीय वर्ष

सफर

प्राचीन ज्ञान का धरती पर, नवाचार का सूरज चमका
कौशल और विद्या का संगम, भारत में ऐसा दमका।
गुरुकुल से लेकर डिज़िटल क्रान्ति तक
ज्ञान परंपरा बहती रहे निरंतर
हस्तशिल्प से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तक
कौशल विकास का सफर है सुंदर।

योग और आयुर्वेद की प्राचीन कला
अब वैश्विक मंच पर पाती सम्मान
कंप्यूटर कोड से लेकर रॉकेट तक
भारतीय प्रतिभा दिखाती ज्ञान।

सृजन और नवाचार का अद्‌भुत मेल
परंपरा और आधुनिकता का अनूठा खेल
ज्ञान और कौशल का यह पावन संगम।
भारत की पहचान, भारत का गौरव अनुपम।

देवश्री जैन
सहायक आचार्य, भौतिक विभाग

ज्ञान कौशल का संगम भारत

यह भूमि है वेदों की वाणी, यह पुराणों की गूंज है,
ऋषियों की तपस्थली यह, जहाँ सत्य-अमृत की पुंज है।
योग-ध्यान का दीप जला था, गूंजा ओंकार महान
ब्रह्मज्ञान की ज्योति फैली, गीता का अमर विधान।

चरक-सुश्रुत की विधा महान, आर्यभट्ट की ज्योति जलाए
ब्रह्मगुप्त-वराहमिहिर के ज्ञान से जग आलोकित पाए।

तक्षशिला, नालंदा जैसे, शिक्षा के दीप प्रज्वलित थे
ज्ञान-संवाद की गलियों में, शास्त्रार्थ बड़े प्रबलित थे।

गुरुकुलों में शिष्य गढ़े गए, नीति-न्याय की धारा बही
संस्कृत के सुरम्य शब्दों से, सजी हमारी बानी रही।

चित्रकला, स्थापत्यकला का, अनुपम रूप यहाँ रचा
अजन्ता की दीवारों पर, इतिहास का स्वरुप सजा।

खजुराहो, कोणार्क के मंदिर, कहे स्थापत्य की कहानी
मूर्ति-कला में उकेरी गई, शिव-शक्ति की अमर निशानी।

यह विज्ञान, यह दर्शन, यह कला, सबका संगम भारत है
हर युग में नवप्रकाश दिखाए, ऐसा अनुपम भारत है।

अर्चना कोठारी
सहायक आचार्य, इतिहास

ज्ञान, कौशल और अंग्रेजी भाषा: सफलता की कुंजी

मनुष्य की सफलता के पीछे ज्ञान और कौशल की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। ये दोनों क्षेत्र व्यक्ति के व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में उसे श्रेष्ठ बनने में सहायता करते हैं। विशेष रूप से, अंग्रेजी भाषा का ज्ञान और उसमें दक्षता आज के वैश्विक युग में एक अमूल्य संपत्ति बन चुका है। इस लेख में हम ज्ञान, कौशल और अंग्रेजी भाषा के महत्व को विस्तार से समझेंगे और जानेंगे कि ये तीनों कैसे परस्पर जुड़े हुए हैं तथा हमारी प्रगति में सहायक होते हैं।

ज्ञान का अर्थ और महत्त्व - ज्ञान केवल सूचनाओं का संग्रह नहीं है, बल्कि यह अनुभव, विश्लेषण और समझ से परिपूर्ण होता है। यह व्यक्ति को सही और गलत की पहचान करने, तार्किक निर्णय लेने और नई संभावनाओं को पहचानने में सहायता करता है।

ज्ञान के स्त्रोत - पुस्तकें और अध्ययन, अनुभव और पर्यवेक्षण, शिक्षक और मार्गदर्शक, तकनीकी साधन आदि

ज्ञान के प्रकार - सैद्धांतिक ज्ञान, व्यावहारिक ज्ञान, आध्यात्मिक ज्ञान।

कौशल के अन्तर्गत कौशल के विविध स्वरूप है

तकनीकी कौशल, सॉफ्ट स्किल्स, संज्ञानात्मक कौशल, सृजनात्मक कौशल जिनसे एक ज्ञानार्थी अपने जीवन को सहज व्यावसायिक तौर पर जोड़ सकता है।

कौशल विकास को समृद्ध एवं विस्तृत करने के विविध उपाय है जिनमें नियमित अभ्यास और प्रशिक्षण, मनोवैज्ञानिक विकास, तकनीकी साधनों का उपयोग, फीडबैक और सुधार, सेमिनार, कार्यशालाएं प्रमुख है। आज के प्रतिस्पर्धा दौर में केवल ज्ञान प्राप्त करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उस ज्ञान को व्यवहार में लाने के लिए कौशल भी विकसित करना आवश्यक है।

आज के वैश्विक दौर में अंग्रेजी भाषा का ज्ञान होना एक अनिवार्य आवश्यकता बन गया है। यह केवल एक भाषा नहीं, बल्कि ज्ञान, संचार और व्यावसायिक सफलता की कुंजी है। अंग्रेजी भाषा से वैश्विक संपर्क, शिक्षा और करियर में लाभ, तकनीकी और डिजिटल की आवश्यकता, यात्रा और सांस्कृतिक आदान-प्रदान सहज और सरल हो जाता है।

अंग्रेजी भाषा सीखने के लिए नियमित अभ्यास, ऑनलाइन संसाधनों का उपयोग, फिल्में और किताबें पढ़ना व बोलचाल का अभ्यास करने से इस भाषा को सरलता से सीखा जा सकता है। यह भाषा का कौशल स्वरूप है जिससे एक विद्यार्थी अपने जीवन को भाषाई दृष्टि से मजबूत बनाते हुए व्यावसायिकता की ओर सफल कर सकता है।

निष्कर्ष - ज्ञान, कौशल और अंग्रेजी भाषा - ये तीनों जीवन की प्रगति के लिए आवश्यक क्षेत्र हैं। ज्ञान से हमें सही दिशा मिलती है, कौशल हमें दक्ष बनाता है और अंग्रेजी भाषा हमें वैश्विक मंच पर आगे बढ़ने में मदद करती है। इन तीनों को संतुलित रूप से अपनाकर कोई भी व्यक्ति सफलता की ऊँचाइयों को छू सकता है। इसलिए, निरंतर सीखने, अभ्यास करने और खुद को विकसित करने की आदत डालें ताकि जीवन में सफलता प्राप्त कर सकें।

डिम्पल ज्योतियाना
सहायक आचार्य, अंग्रेजी

गणित और कौशल : भारत से संबद्ध एक अमूल्य धरोहर

भारत का गणित और कौशल सदियों से विश्व में प्रसिद्ध रहा है। प्राचीन भारतीय गणितज्ञों ने गणित के क्षेत्र में कई महान कार्य किए हैं, जो आज भी आधुनिक गणित की नींव माने जाते हैं। भारत के गणित और विज्ञान के योगदान से दुनिया को दशमलव प्रणाली, शून्य, त्रिकोणमिति, और कैलकुलस जैसे महत्वपूर्ण सिद्धांत मिले। प्राचीन काल का योगदान : भारत में गणित की शुरुआत वेदों और उपनिषदों से हुई, जहां संख्याओं और उनके महत्व का विस्तार से उल्लेख था। प्रसिद्ध गणितज्ञों जैसे आर्यभट्ट, भास्कराचार्य, और वराहमिहिर ने अपनी गणितीय दृष्टिकोणों से न केवल भारत बल्कि पूरी दुनिया को प्रेरित किया।

शून्य और दशमलव प्रणाली : भारत ही वह भूमि है जहाँ शून्य और दशमलव प्रणाली का आविष्कार हुआ। इसने गणित की भाषा को पूरी तरह से बदल दिया और आधुनिक गणितीय विकास के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

समय के साथ बदलाव : आज भी भारत में गणित और कौशल का अध्ययन बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। भारतीय छात्रों और गणितज्ञों की सफलता विभिन्न अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भारत की गणितीय धरोहर को जीवित रखे हुए है।

निष्कर्ष -

गणित और कौशल का भारत से गहरा संबंध है जो न केवल हमारे इतिहास को प्रदर्शित करता है बल्कि आज भी हमारी आधुनिक शिक्षा और विज्ञान में अहम स्थान रखता है। भारत की गणितीय धरोहर को सहेजते हुए यह हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

सुगन्धा मंत्री
सहायक आचार्य, गणित

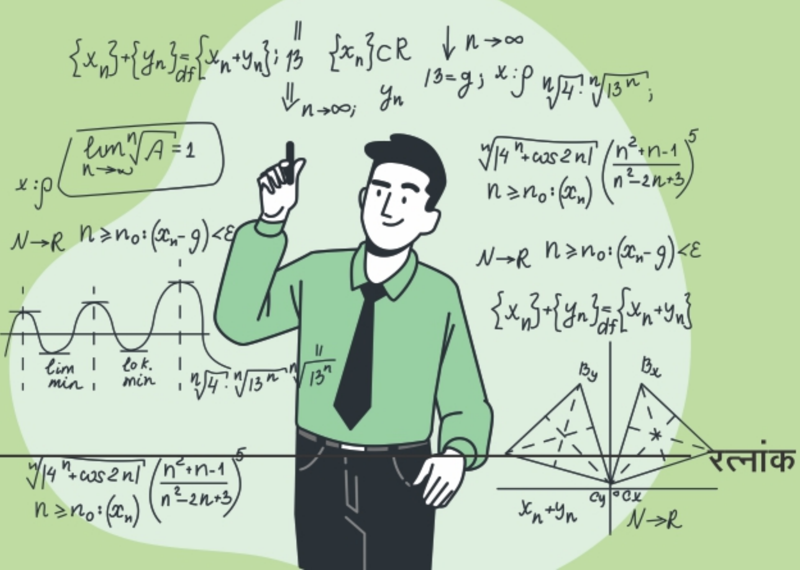

पी.टी. उषा पय्योली एक्सप्रेस

पी.टी. उषा जिन्हें 'भारत की उड़न परी' के नाम से जाना जाता है, खेल के क्षेत्र में ज्ञान और कौशल के संगम का सबसे बेहतरीन उदाहरण हैं। उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि किसी भी लक्ष्य को हासिल करने के लिए हमें ज्ञान और कौशल दोनों का सही संतुलन बनाना पड़ता है।

पी.टी. उषा का जन्म 1964 में केरल के पय्योली गाँव में हुआ था। उनका बचपन बहुत साधारण था, लेकिन उनमें एक खास बात थी - दौड़ने का जुनून। जब अन्य लड़कियाँ खेलों से दूर रहती थी, उषा अपने सपनों को पूरा करने के लिए मैदान में पसीना बहा रही थी। यही से उनके जीवन की असली शुरुआत हुई उनके पहले कोच ओ.एम. नांबियार ने उनकी प्रतिभा को पहचाना और उन्हें सही दिशा में मार्गदर्शन दिया।

उषा के लिए ज्ञान का मतलब सिर्फ किताबों से नहीं था। उनका ज्ञान था कि कैसे दौड़ के दौरान शरीर को सही स्थिति में रखा जाए कहाँ तेज़ी से दौड़ना है और मानसिक रूप से खुद को कैसे तैयार करना है। उन्होंने तकनीक को पूरी तरह से समझा और इसी ज्ञान के आधार पर उन्होंने अपने खेल को और बेहतर किया। उषा के कोच ने उन्हें यह भी सिखाया कि सिर्फ शारीरिक ताकत से नहीं बल्कि मानसिक ताकत से भी मुकाबला करना होता है। उषा ने अपनी मेहनत और नियमित अभ्यास से अपने कौशल को बखूबी निखारा। वे लगातार दौड़ती रहीं और अपनी गति, तकनीक और फिटनेस को सुधारती रहीं। उनका कौशल ही था, जिसने उन्हें 1986 में सियोल एशियाई खेलों में चार स्वर्ण पदक और एक रजत पदक दिलाए। उनकी दौड़ने की गति को देखकर लोग उन्हें ''पय्योली एक्सप्रेस'' कहते थे, क्योंकि वे अपने समय से कहीं आगे दौड़ती थीं। अगर पी.टी. उषा के पास सिर्फ दौड़ने का कौशल होता, लेकिन उन्हें खेल की तकनीकी जानकारी न होती, तो शायद वह ओलंपिक में चौथे स्थान तक नहीं पहुँच पाती। दूसरी ओर, अगर उन्हें सिर्फ ज्ञान होता और अभ्यास न होता, तो वह एशियाई खेलों में इतना बड़ा रिकॉर्ड नहीं बना पातीं। यह साबित करता है कि ज्ञान और कौशल दोनों का संगम ही सफलता की कुंजी है।

सृष्टि असाटी, खेल विभाग

डिजिटल क्रांति से सशक्त भारत

भारत हमेशा से ज्ञान और कौशल का केंद्र रहा है। आज के डिजिटल युग में सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) ने हमारे जीवन को पूरी तरह से बदल दिया है। शिक्षा, रोजगार, व्यवसाय और सरकारी सेवाओं में आईटी का बड़ा योगदान है। यह तकनीक न केवल सूचना के आदान-प्रदान को आसान बना रही है बल्कि देश की अर्थव्यवस्था और नवाचार को भी गति दे रही है। इस लेख में हम समझेंगे कि कैसे आईटी भारत को ज्ञान और कौशल में आगे बढ़ा रहा है। आईटी ने शिक्षा को आसान और सुलभ बना दिया है। अब ऑनलाइन कक्षाओं, डिजिटल पुस्तकालयों और ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म के जरिए लोग कहीं से भी पढ़ सकते हैं। डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया जैसी सरकारी योजनाएँ भी डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा दे रही हैं। छात्र अब मशीन लर्निंग, डेटा साइंस और कोडिंग जैसे नए कौशल ऑनलाइन सीख सकते हैं।

ऑनलाइन शिक्षा प्लेटफॉर्म जैसे स्वयं, नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी और उन्नत भारत अभियान ने ग्रामीण और शहरी छात्रों के बीच की दूरी को कम कर दिया है। इस से सीख ने की प्रक्रिया अधिक प्रभावी और किफायती बन गई है। आज के समय में सिर्फ डिग्री लेना पर्याप्त नहीं है, बल्कि आईटी क्षेत्र में नौकरी पाने के लिए सही कौशल भी जरूरी है। सरकार और निजी कंपनियाँ कई ट्रेनिंग प्रोग्राम चला रही हैं, जैसे- प्रधान मंत्री कौशल विकास योजना, राष्ट्रीय डिजिटल साक्षरता मिशन, नैक, आईटी स्किल प्रोग्राम्स आदि है।

आईटी के कारण भारत में एक डिजिटल क्रांति आई है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीनलर्निंग, ब्लकचेन, क्लाउड कंप्यूटिंग और साइबर सिक्योरिटी जैसे क्षेत्रों में भारत के युवा तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। अब लोग डिजिटल प्लेटफॉर्म पर रोजगार पा रहे हैं और अपने खुद के ऑनलाइन बिजनेस शुरूकर रहे हैं।

फ्रीलांसिंग, स्टार्टअप और डिजिटल एंटरप्रेन्योरशिप की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए डिजिटल मार्केटिंग, वेब डेवलपमेंट, और ई-कॉमर्स जैसी स्किल्स भी लोकप्रिय हो रही हैं।

आईटी भारत को आत्म निर्भर बनाने में भी मदद कर रहा है। भारत में कई स्टार्टअप और टेक कंपनियाँ तेजी से आगे बढ़ रही हैं। डिजिटल भुगतान और ई-गवर्नेंस सेवाएँ भी आम लोगों के जीवन को सरल बना रही हैं। इसके अलावा, 5जी तकनीक, इंटरनेट ऑफ थिंग्स और स्मार्ट शहरों के विकास में आईटी की महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी। इससे भारत के बुनियादी ढांचे को और मजबूत किया जा सकेगा।

सूचना प्रौद्योगिकी ने ज्ञान और कौशल को सभी के लिए सुलभ बना दिया है। यदि हम आईटी में निरंतर नवाचार और अनुसंधान करें, तो भारत निश्चित रूप से एक वैश्विक तकनीकी शक्ति बन सकता है। यह समय है कि हम आईटी का पूरा लाभ उठाएँ और भारत को ज्ञान और कौशल में सबसे आगे ले जाएँ।

आईटी न केवल हमारे वर्तमान को सशक्त बना रहा है, बल्कि भविष्य की एक मजबूत नींव भी रख रहा है। सही दिशा में कदम बढ़ा कर, हम एक आत्मनिर्भर और डिजिटल रूप से सक्षम भारत का निर्माण कर सकते हैं।

दिव्या कुमारी
सहायक आचार्य,
कंप्यूटर विज्ञान विभाग

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस : भारत में ज्ञान और कौशल का नया युग

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में भारत ने एक नए युग की शुरुआत की है जिसमें ज्ञान और कौशल का अद्‌भुत संगम देखने को मिल रहा है। आज, भारत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में न केवल देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी इसकी पहचान बन रही है। इस संगम को समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कैसे भारत में ज्ञान और कौशल को एक नई दिशा दे रहा है। भारत ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में अपनी क्षमता और कौशल का प्रदर्शन किया है। भारतीय इंजीनियरों, शोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के विभिन्न पहलुओं में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जैसे कि मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग, प्राकृतिक भाषा प्रोसेसिंग, और कंप्यूटर विज़न। भारत की प्रमुख तकनीकी संस्थाएँ, जैसे कि आईआईटी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में उत्कृष्ट शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान कर रही हैं।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से भारत का आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस क्षेत्र ज्ञान और कौशल का बेहतरीन उदाहरण है। भारतीय इंजीनियर और डेटा वैज्ञानिक अपने तकनीकी ज्ञान और कौशल का उपयोग करके आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित समाधान विकसित कर रहे हैं, जो विभिन्न उद्योगों में क्रांतिकारी बदलाव ला रहे हैं।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीक अब भारतीय स्वास्थ्य सेवाओं, शिक्षा, कृषि, परिवहन और वित्तीय क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। उदाहरण के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग कृषि में फसल की पैदावार बढ़ाने, मौसम का पूर्वानुमान करने और किसानों को उनकी फसलों के लिए सर्वोत्तम उपाय सुझाने के लिए किया जा रहा है।

भारत में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से सामाजिक और आर्थिक बदलाव भी संभव हो रहे हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रयोग से सरकारें और उद्योग बेहतर निर्णय ले पा रही हैं, जिससे रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं और विकास की दर तेज हो रही है। भारतीय स्टार्टअप्स आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीक का इस्तेमाल करके नए उत्पाद और सेवाएँ विकसित कर रहे हैं जो न केवल भारत बल्कि विश्वभर में प्रभावी हैं।

भारत में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का भविष्य बहुत ही उज्ज्वल है। सरकार की 'आत्मनिर्भर भारत' और 'डिजिटल इंडिया' जैसी पहलों के तहत, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को एक प्रमुख तकनीकी क्षेत्र के रूप में बढ़ावा दिया जा रहा है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से संबंधित शिक्षा और प्रशिक्षण को और अधिक सुलभ बनाने के लिए कई संस्थाएँ और संगठन कार्य कर रहे हैं ताकि युवा भारतीय विशेषज्ञ इस क्षेत्र में अग्रणी बन सकें।

मीना शर्मा
सहायक आचार्य, कंप्यूटर विज्ञान विभाग

ज्ञान क्या है ?

शब्दकोष कहता है ''निरपेक्ष सत्य की स्वानुभूति ही ज्ञान है।'' यह प्रिय - अप्रिय, सुख-दुःख आदि भावों से निरपेक्ष होता है।

महान निबंध लेखक 'फ्रेंसिस बेकन' ने कहा है - 'ज्ञान शक्ति है' (**Knowledge is Power**) अर्थात् वास्तविक शक्ति ज्ञान से ही प्राप्त की जा सकती है। ज्ञान ही वह गुण है जो मनुष्य को पशुओं से भिन्न कर उन्हें कौशल प्रदान करता है। ज्ञान वह असीमित धन है जिसे बाँटकर बढ़ाया जा सकता है। ज्ञान वह साधन है जिसके माध्यम से व्यक्तिगत एवं सामाजिक उन्नति की जा सकती है।

हमारे यहाँ आर्यभट्ट, भास्कर, चाणक्य एवं सुश्रुत जैसे महान गणितज्ञ, अर्थशास्त्री एवं चिकित्सक हुए जिन्होंने पूरे विश्व को मूल आधार प्रदान किया। विदेशों से आने वाले लोगों ने हमारे इन्हीं महान भारतीयों के ग्रन्थों से ज्ञान बटोरकर अपने देश को विश्व शक्ति बनाया। हालांकि हमने भी उनसे भाषा, सभ्यता, संस्कृति का आदान प्रदान कर परस्पर ज्ञान ग्रहण किया है। जिसका उदाहरण हमें अपनी भाषाओं में, कलाकृतियों में, भवन निर्माणों में दिखाई देता है। वर्तमान समय में नई शिक्षा नीति को ज्ञान एवं कौशल के आधार पर ही विकसित किया गया है। नई शिक्षा नीति 14 विद्या और 64 कलाओं के रूप में वर्णित भारतीय ज्ञान परम्परा जिसमें दर्शन, व्यावहारिक शिक्षा, कला, कौशल, शिल्पकारिता, कृषि, स्वास्थ्य, विज्ञान एवं योग आदि शामिल है, उसे बढ़ावा देती है। इन पारंपरिक विषयों का अध्ययन एवं अनुकूलन आधुनिक जीवन के हर क्षेत्र में बदलाव लाएगा।

भारतीय ज्ञान प्रणाली से न केवल शिक्षा में क्रांति आयेगी बल्कि भारतीय मानस एवं जीवन शैली में भी नया जोश आयेगा। मौलिक भारतीय विचार, ज्ञान, परंपरा, कला, कौशल एवं प्रबंधन को विभिन्न क्षेत्रों में शामिल करके भारत के भविष्य में एक सकारात्मक परिवर्तन आयेगा, आत्म-सम्मान एवं गौरव बढ़ेगा। योग एवं ध्यान से शारीरिक, मानसिक और आध्यत्मिक उन्नयन में भूमिका तय होगी।

भगवद् गीता के अध्याय 2, श्लोक 50 के अनुसार जो विवेकपूर्वक बिना आसक्ति के कर्म के विज्ञान का अभ्यास करेगा वह इस जीवन में अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के कर्मों से छुटकारा पा जायेगा इसलिये योग के लिए प्रयास करो जो कुशलता से कार्य करने की कला है।

''बुद्धियुक्तो जहातिह उभे सुकृतदुष्कृते।
तस्माऔद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम्।।''

हेमन्त शर्मा
सहायक आचार्य, प्रबंधन विभाग

माँ

नेहा शर्मा
प्रशासनिक विभाग

मैंने अपनी माँ में सारा संसार देखा है
अपने काम सबके काम कर देर से सोते देखा है
थकान कितनी भी हो उन्हें हर सुबह मेरे लिए जल्दी उठते देखा है
जब भी मांगा मैंने कुछ जिद से
उन्हें हँसकर वो सारी चीजें दिलाते देखा है

मेरे लिए छाँव है माँ मैंने हरपल
उन्हें वटवृक्ष की भांति धूप सहते देखा है
कष्ट कितने भी हो उनकी जिंदगी में
मुझे कष्ट न हो कभी यही प्रार्थना करते देखा है

माँ मेरे लिए तो धरती का स्वर्ग है
इसी पृथ्वी पर अनन्त स्वर्ग देखा है मैंने
ईश्वर कभी उनकी आँखों में आँसू न दे
हर खुशी उन्हें देने का संकल्प बुना है मैंने
मेरी माँ में सम्पूर्ण संसार देखा है मैंने...

कंप्यूटर

कंप्यूटर की दुनिया में बसी एक नई पहचान,
ज्ञान का सागर, तकनीकी विकास का स्थान।

डिजिटल क्रांति का है यह सवेरा,
बदलते भारत का नया युग है बसेरा।

इंटरनेट की तरंगों में हर एक कार्य संभव,
शिक्षा, व्यापार, विज्ञान में हो रहा है प्रेम।

स्मार्ट सिटी का सपना है अब साकार होने,
हर एक गाँव में भी अब बदलाव हो जाने।

कंप्यूटर की शक्ति से हमारा राष्ट्र चमकता,
नए भारत की ओर, कदम बढ़ता, दमकता।

आधुनिक युग में हम सशक्त, आत्मनिर्भर,
कंप्यूटर से भारत बन रहा है गौरवमयी, संपूर्ण।

उम्मीदों की किरणें अब और बढ़ी हैं आस,
विकसित भारत, जो कभी था अंधकार, अब है प्रकाश।

चेतना चौधरी
बी.सी.ए., तृतीय वर्ष

ज्ञान की गंगा

ज्ञान की गंगा बहती यहाँ, कौशल की बूंदें गिरती है,
संस्कृति और विज्ञान संग, नई रोशनी यहाँ से मिलती है।
योग, वेद और ग्रंथ हमारे, दुनिया को राह दिखाते हैं,
नवाचार की जोत जलाकर, नित नयी किरणें लौत है।
शिक्षा का मंदिर हर गली में, हुनर का हर ओर उजाला,
तकनीक और परिश्रम मिलकर, बना रहे सुनहरा भविष्य हमारा।
हाथों में हुनर, आँखों में सपने, भारत आगे बढ़ता जाए,
ज्ञान की शक्ति और कौशल की लय से, नित नया इतिहास बनाए।
बेटियाँ अब रूकती नहीं, हर ऊँचाई को छूती है,
शिक्षा, विज्ञान और कला में, अपने परचम लहराती हैं।
कभी कलम से रोशन दुनिया, कभी मशीनों से नवाचार,
कौशल और ज्ञान की मूरतें, बना रही भारत शानदार।
चलो मिलकर दीप जलाएं, हर घर को रोशन कर जाएं,
ज्ञान और कौशल से मिलकर, भारत को ऊँचाइयों तक पहुँचाएं।

झिलमिल जैन
बी.सी.ए., तृतीय वर्ष

ज्ञान कौशल का संगम

भारत एक ऐसा देश है जहाँ ज्ञान और कौशल का संगम होता है। यहाँ की समृद्ध संस्कृति और विरासत में ज्ञान और कौशल का अद्वितीय मेल देखने को मिलता है। ज्ञान के माध्यम से महिलाएँ घर तथा देश को आगे बढ़ा जरूरी है क्योंकि ज्ञान के मंच पर सब एक समान है। विधि का विधान पलट दे वो ब्रह्मास्त्र ज्ञान है, न जाति काम आती है, न नाम काम आता है। सिर्फ ज्ञान ही आपको आपका हक दिलाता है। ज्ञान की धरा पर कौशल का मिलान वेदों से लेकर विज्ञान तक यही है उसकी पहचान आइए मिलकर बढ़ाएं इस संगम को ज्ञान और कौशल के साथ भारत को आगे बढ़ाएं।

कौशल की बात करें तो भारत के हाथ, मेहनत और लगन से रचते है। नयी दिशा, ज्ञान और कौशल का संगम है भारत, यही उसकी यही है उसकी पहचान।

चंचल दाधीच
बी.ए., प्रथम वर्ष

ज्ञान

ज्ञान यह दुनिया का अपार सागर है।
जितना इसे ग्रहण करता उन्नति पाता है।
ज्ञान धन से श्रेष्ठ दूसरी न कोई पूँजी है।
अज्ञानी को ज्ञानी बनाता ऐसा सागर है।
ज्ञानी व्यक्ति दुनिया में एक उपहार है।
देश को उन्नति, प्रगति दिलाते है।
सिर-माथे हमारे वो वेद-पुराण है।
जिससे र्मादर्शन हमारा होता है।
ज्ञान की देवी सरस्वती माता है।
जिनके ज्ञान से उद्धार हमारा होता है।
ज्ञान से व्यक्ति कठिनाइयों को पार करता है।
ज्ञान से ही समाज संतुलित रहता है।
ज्ञान ही व्यक्ति में जिज्ञासा बढ़ाता है।
तभी व्यक्ति अज्ञानता से मुक्ति पाता है।

ईशा सिखवाल
बी.ए.बी.एड. तृतीय वर्ष

आँधी

पहाड़ी वादियों में धुल सी क्यों छा गयी
यह विकास की आँधी आ ही गयी।
दरक रहे हैं न जाने कितने हिस्से मेरे पहाड़ के
ये टूटते पत्थर, फिसलती मिट्‌टी
न जाने कब कहर बन जायेगी।
वे सूरज का ढ़लना, पहाड़ों में छिपना
धूल की चादर में सिमटता जा रहा है।
चिड़ियों का चहकना, नदियों का कल-कल
मशीनी आवाजों से दबता जा रहा है।
फिर आती है वर्षा करती है तांडव,
मंजर तबाही का हमको है दिखाती।
रूलाता है हमको हर छोटा नुकसान अपना,
पर पेड़ों का काटना, बेघर जानवरों का होना,
क्यों नहीं हमको है रूलाता।
जिन्दगी जीने का मायना बदला है हमने,
हर जगह मोल-भाव करते है यूँ ही।
विकास की आँधी चली कुछ इस कदर है,
भूल जाते हैं हम कि इसी प्रकृति ने हमको है बनाया।

वन्दना झारोटिया
बी.ए.बी.एड., द्वितीय वर्ष

भारत एवं ज्ञान कौशल का अद्‌भुत संगम

"सा विद्या या विमुक्तये।"

अर्थात्, "वह विद्या जो मुक्ति प्रदान करे, वही सच्ची विद्या है।" यह संस्कृति श्लोक भारतीय ज्ञान परंपरा की गहराई और उद्देश्य को दर्शाता है। भारत अपनी प्राचीन सभ्यता के साथ ज्ञान और कौशल का अद्वितीय संगम है जिसने इसे विश्वगुरु के रूप में स्थापित किया है। ज्ञान के साथ-साथ भारत में कौशल का भी उतना ही महत्व रहा है। स्थापत्य कला में खजुराहो के मंदिर, कोणार्क का सूर्य मंदिर और ताजमहल जैसे अद्‌भुत उदाहरण मिलते हैं। हस्तशिल्प, वस्त्र निर्माण, और धातु कार्य में भारतीय कारीगरों की निपुणता विश्वविख्यात है। भारतीय शिल्पकारों की उत्कृष्टता का प्रमाण यह है कि उनके द्वारा निर्मित वस्त्र और कलाकृतियाँ आज भी विश्वभर में सराही जाती हैं।

आधुनिक भारत में भी ज्ञान और कौशल का यह संगम स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। सूचना प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष अनुसंधान, और जैव प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में भारत ने अपनी विशेष पहचान बनाई है। "मेक इन इंडिया" और "स्किल इंडिया" जैसे अभियानों के माध्यम से सरकार युवाओं को कौशल विकास के लिए प्रोत्साहित कर रही है, जिससे वे न केवल राष्ट्रीय स्तर पर बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रतिस्पर्धा कर सकें। उदाहरण के लिए भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी कंपनियाँ आज विश्वभर में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रही हैं जिससे भारत को डिजिटल युग में अग्रणी स्थान प्राप्त हुआ है।

इस प्रकार भारत का इतिहास और वर्तमान दर्शाता है कि यह देश ज्ञान और कौशल का सच्चा संगम है। प्राचीन काल से लेकर आज तक, भारतीय संस्कृति ने ज्ञान और कौशल के माध्यम से विश्व को मार्गदर्शन प्रदान किया है और भविष्य में भी यह प्रवृत्ति जारी रहेगी।

नन्दिनी खण्डेलवाल
बी.ए., द्वितीय वर्ष

भारत

गुरूकुलों की पावन वाणी,
ऋषियों की तपस्या महान,
शास्त्रों में अंकित गूढ़ विज्ञान,
जिसने रचा नव निर्माण।।

शून्य दिया, गणित संवारा,
योग सिखाया जग को प्यारा,
आयुर्वेद की अनुपम देन,
जीवन का सार हमें उबारा।।

कौशल की गूंज सुनी जहाँ
हाथों ने रचा नव इतिहास
हस्तकला से विश्व मोह लिया
शिल्पों में बसा सारा आकाश

तकनीक में बढ़ता हर पग,
आई.टी. की शक्ति अपार
नवाचार से भरा हुआ मन
करता विश्व में हमें साकार

ज्ञान और कौशल का संगम
बनाए भारत को महान
हर युवा में शक्ति बसती
रचे नया हिन्दुस्तान।

महिमा सिंह चारण
बी.ए., द्वितीय वर्ष

प्रबंधन का मंत्र

समय का रखना ध्यान सदा
यही सफलता की है दवा।
योजना बनाना पहला कदम
उसी से बढ़ता हर एक धरम।

नेतृत्व हो जो शांत, समन्दर
बनता है वह टीम का आधार।
संचार हो साफ और सरल
तभी हटेगा हर एक झंझाल।

संसाधनों का सही उपयोग
लाए संगठित प्रयासों का संयोग।
जो करे कार्य का आंकलन
वही बनेगा श्रेष्ठ प्रबंधन।

सीखो हर अनुभव से बात
प्रबंधन है जीवन की कला महान।
कर्मठता और सोच का मेल
बनाता है लक्ष्य का हर खेल।

नेहा मालाकार
बी.कॉम., द्वितीय वर्ष

उड़ान

सपने देखती हुई इन आँखों को
क्यूँ ये घूंघट से ढकना चाहता है
अपने सपनों के लिए बेचैन दिल को
क्यूँ ये इज्जत के नाम पर तोड़ना चाहता है?
सपनों की उड़ान भरने वाले पंखों को
क्यूँ ये रीति रिवाजों के नाम पर बाँधना चाहता है?
चमकते हुए हीरे चूल्हे की आग में
क्यूँ कोयला बनाना चाहता है
गुजरती हुई उम्र में बेड़ीयां बढ़ती गई
अब क्यूँ ये इसे कैद बनाना चाहता है?
जो बैताब है अर्श के लिए
उसे क्यूँ फर्श से बाँधना चाहता है?
जो मेरा नहीं मैं क्यूँ उससे डरूँ ....
क्यूँ रोज टूटते हुए सपनों में मरूँ .....
मेरी उड़ान तो चाँद तक है
मैं क्यूँ इन रिवाजों इन लोगों से डरूँ.....
आखिर ये समाज क्या जोड़ना क्या तोड़ना चाहता है।
कब तक मैं इससे लड़ूँ।

मुस्कान सोलंकी
बी.ए.बी.एड., चतुर्थ वर्ष

Digital Literacy and Its Role in India's Development

Digital literacy is the ability to use digital devices, the internet, and technology effectively. In today's digital age, it plays a crucial role in India's growth by enabling people to access information, improve education, and enhance job opportunities. With initiatives like Digital India, the government aims to bridge the digital divide and empower citizens with essential digital skills.

In education, digital literacy allows students to learn online, access study materials, and develop technological skills for future careers. For businesses, it helps small entrepreneurs expand their reach through e-commerce and digital marketing. Digital banking and online transactions make financial services more accessible, especially in rural areas. However, challenges like lack of infrastructure, internet access, and awareness still exist. Efforts to improve digital education in schools, affordable internet, and skill training programs can boost digital literacy across the country.

As India moves towards a digital economy, digital literacy is essential for social and economic progress. It empowers individuals, creates employment opportunities, and enhances governance. By promoting digital education and accessibility, India can build a more inclusive and technologically advanced society.

Deeksha Kumawat
B.C.A. Part-I

Bharat: A Blend of Knowledge and Skills

Bharat has always been a land of great knowledge and talent and has made important contributions to many fields like science, technology, medicine, arts, and business with mix of knowledge and skill in many areas, from movies and games to big companies, politics, cricket, and global leadership.

Cinema a reflection of Bharat's Knowledge and Skills

Bollywood and regional film industries like Tollywood, Kollywood, and Mollywood tell powerful stories that connect with people. Movies like Lagaan, Taare Zameen Par, and 3 Idiots talk about important issues like education and society.Internationally, films like RRR, which won an Oscar, and Slumdog Millionaire, which was praised worldwide, show Bharat 's storytelling power and the uses of traditional ideas with modern filmmaking techniques, making an impact all over the world.

Bharat's Knowledge and Skills

Bharat has produced many talented individuals who have achieved success globally. Sundar Pichai, CEO of Alphabet (Google), shows how Bharat's education and talent are leading in global technology.Ratan Tata, a great businessman, has built successful companies while helping society.APJ Abdul Kalam, Bharat's Missile Man and former President, helped Bharat grow in science and space research.Mary Kom, a world champion boxer, has shown that talent and hard work can achieve great things.Reliance Industries, led by Mukesh Ambani, is one of Bharat's biggest companies. It has transformed industries like telecommunications with Jio, making internet access cheaper and faster for millions of Indians. Reliance is also expanding into retail, digital services, and green energy, helping Bharat grow in many ways. Bharat has produced legendary cricketers like Sachin Tendulkar, MS Dhoni, Virat Kohli, and Rohit Sharma. The Indian Premier League (IPL) has transformed cricket, making it more exciting and global. Bharat's victories in the Cricket World Cup (1983, 2011) and the T20 World Cup (2007) have made the country proud.

Bharat's Political Policies

Bharat's political policies have played a major role in shaping its development. The government has introduced schemes like:Make in India, which promotes local manufacturing and attracts foreign investments.Digital India, which aims to improve digital infrastructure and internet accessibility.Startup India, which supports new businesses and entrepreneurs.GST (Goods and Services Tax), which has simplified the tax system and improved business operations.These policies are helping Bharat grow economically and make a mark on the global stage.

Bharat on the World Stage

Bharat is becoming a global leader in many fields. In technology, Bharat is an IT hub, with cities like Bengaluru and Hyderabad producing top engineers and entrepreneurs. The pharmaceutical industry, especially during the COVID-19 pandemic, proved Bharat's ability to produce vaccines for the world. Bharat's space agency, ISRO, has launched missions like Chandrayaan and Mangalyaan, making Bharat one of the top space nations. Bharat's economy is growing fast, and companies like TCS, Infosys, and Reliance are making Bharat stronger in global markets.

With its rich culture and modern ideas, Bharat is truly a blend of knowledge and skills, creating a brighter future for everyone. , Bharat has also produced some of the world's greatest writers like Rabindranath Tagore, R.K. Narayan, and Arundhati Roy, whose works have influenced literature globally. Magicians like P.C. Sorcar have amazed audiences with their tricks, showcasing India's deep-rooted tradition in the art of illusion. The country is also becoming more inclusive, with transgender activists like Laxmi Narayan Tripathi working towards equal rights and breaking barriers in society. The lists are unending but adhering to the limits, Nevertheless Bharat and its people will be always there to make it more proud and flying high.

Bollywood shines with stories so grand,
Cricket unites every heart in the land.
Tech and business reach skies so high,
Magicians and writers make dreams fly.
From past to future, we rise and grow,
Bharat's spirit forever will glow!

Ms. Kavita Priyadrshni
Assistant Professor, Department Of English

Maha Kumbh : Balancing Faith, Safety and Environmental Laws brings up Environmental Challenges in India.

The Maha Kumbh Mela, often called the largest religious gathering on Earth, is a Hindu pilgrimage that takes place every 12 years, rotating among four sacred sites: Prayagraj, Haridwar, Ujjain, and Nashik. This event draws millions of devotees who come to bathe in the holy rivers, seeking spiritual purification and salvation. Maha Kumbh is a deep expression of faith and devotion, it also brings significant legal, logistical, and environmental challenges. Local authorities and police implement crowd control strategies to prevent stampedes, which have occurred in the past. These strategies involve deploying barricades, utilizing CCTV surveillance, and setting up control rooms to monitor crowd movements.The vast scale of the Maha Kumbh presents considerable public safety challenges. Ensuring the safety of millions of pilgrims necessitates careful planning and coordination among various government agencies, including the police, disaster management authorities, and healthcare providers.

The legal framework for public safety during the Maha Kumbh includes:

Special traffic regulations are put in place to manage the surge of vehicles and pedestrians.Temporary medical facilities, such as hospitals and first-aid stations, are established to handle emergencies. Efforts to maintain sanitation, including the installation of portable toilets and waste management systems, are also prioritized to ensure cleanliness. Environmental Considerations the Maha Kumbh has a significant environmental impact, especially on the rivers where the event takes place. Activities like idol immersion, waste disposal, and the large number of pilgrims can contribute to pollution and ecological damage.

Organizers were required to obtain clearances from environmental authorities to comply with regulations designed to protect natural resources. Joint efforts between the government and NGOs aim to reduce pollution through initiatives such as sewage treatment plants, encouraging the use of eco-friendly materials for idols, and regulating waste disposal methods. Efforts to clean and protect the rivers are carried out before, during, and after the event. These initiatives include dredging silt, preventing industrial waste discharge, and raising public awareness about the importance of maintaining river health. Concern remain over the Ganga River's water quality and waste management during the 45 day spiritual and cultural festival. CPCB (Central Pollution Control Board) reported high level of faecal coliform at the confluence of the Ganga and Yamuna rivers at Prayagraj, which clearly indicates sewage contamination. Human induced climate change is already exacerbating extreme weather in India i.e. heat waves, flooding, and other disasters. R. Mathew, a climate scientist in IITM, Pune said these events threaten food, water and energy security. The entire region, not just India, is witnessing a clear trend in rising heat waves, landslides, cyclones, droughts, and floods. Mr. Chandra Bhushan, president and CEO of I FOREST, an independent research and innovation organization, said the scientific community and government realize their limited reach.

However, an event of this magnitude presents serious environmental challenges. The influx of millions of Hindu pilgrims' strains local water resources and ecosystems, generates vast quantities of trash, including non-biodegradable materials and increase pollution levels. Providing scientific information is not enough to reach people. They understand climate change and its effect if they can relate it to their lives, which science and government programmes cannot do. We need to protect nature as otherwise there may not be any Ganga or Yamuna left by the time the next Kumbh happens.

Save the Earth, it's the only One we have!

Dr. Udichi Vyas
Assistant Professor,
Department of Zoology

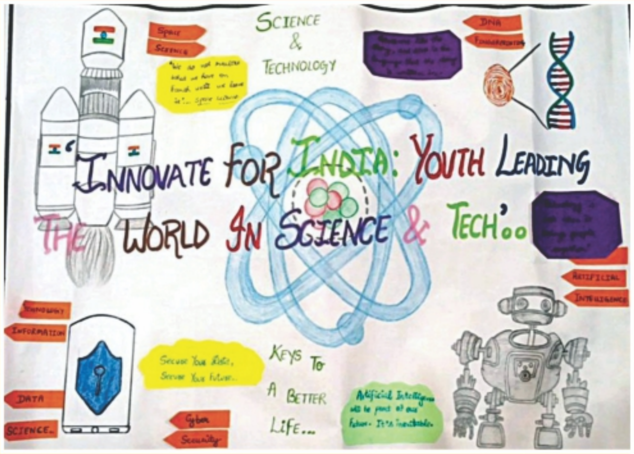

चित्र आरेख

Devyanshi Jhala
B.Com Part II (Semester-IV)

Aastha Arya
(B.Sc.Bio. Part-III)

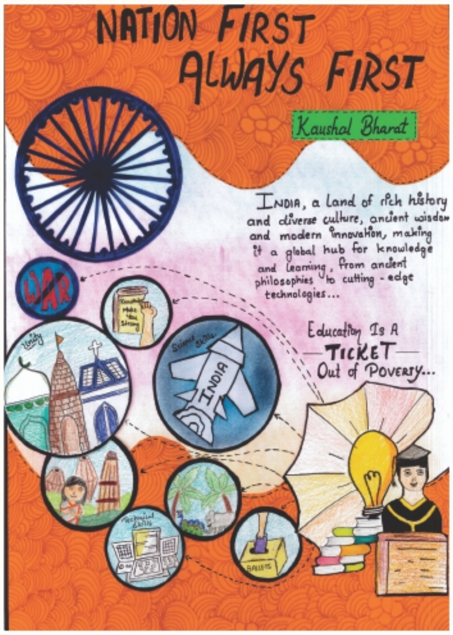

Rakshita Kanwar - Lab. Assistant,
Department of Physics

Prerna Patni
B.Com Part III

Akansha Jain
BBA Semester I

KNOWLEDGE IS POWER

श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी गर्ल्स कॉलेज

(P.G. College Affiliated to MDSU Ajmer)

अजमेर रोड़, किशनगढ़, अजमेर (राजस्थान) **305801**

दूरभाष : **01463-257000**, ई-मेल : info@rkgirlscollege.edu.in

वेबसाइट : www.rkgirlscollege.edu.in